



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest



# निर्द्धार



अंक 48

मार्च 2023

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय),  
नई दिल्ली - 110002

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)

की हिन्दी अर्ध वार्षिक पत्रिका

अंक 48

मार्च /2023

## पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री राजीव पाण्डेय

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)

सलाहकार समिति

श्री सौम्या परिहार

निदेशक (प्रशासन/राजभाषा)

श्री सतीश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

सुश्री पद्मा सुरेश

हिन्दी अधिकारी

संपादक

सतीश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

अर्ध वार्षिक पत्रिका निर्झर	:	अंक 48 मार्च 2023
प्रकाशक	:	महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय) नई दिल्ली- 110002.
स्वत्वाधिकार	:	महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली- 110002.
अंक	:	अड़तालिस
पाठ्यक्रम प्रारूपण एवं समीक्षा	:	सुश्री पद्मा सुरेश, हिन्दी अधिकारी.
पाठ्यक्रम सज्जा एवं समीक्षा	:	श्री सुरेंद्र सिंह, व.लेप.
पाठ्यक्रम टंकण, आवरण एवं सज्जा	:	श्री नीरज, आ.प्र.प्र.

### आवरण पृष्ठ के बारे में

इस कार्यालय का गठन कंप्ट्रोलर इंडिया ट्रेजरीज़ के रूप में वर्ष 1882 में कोलकता में किया गया था। 1919 में इसका नाम बदलकर महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व का कार्यालय रखा गया था। यह कार्यालय 1924 में दिल्ली में स्थानान्तरित किया गया जो 1956 में इन्द्रप्रस्थ इस्टेट में वर्तमान स्थापित भवन के निर्माण तक प्रेजिडेन्ट बॉडीगार्ड लाइन, कर्जन रोड हटमैटस से कार्य करता रहा। स्वतंत्रता के पश्चात यह कार्यालय भारत सरकार के लेन-देनों के लिए उत्तरदायी प्रधान लेखापरीक्षा कार्यालय बन गया। अप्रैल 1979 में इसका नाम बदलकर निदेशक, लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व का कार्यालय हो गया। मई 1985 से, निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व-1 नई दिल्ली तथा निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व-11, नई दिल्ली के दो कार्यालयों के बनने के परिणामस्वरूप इसका नाम पुनः बदलकर निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व-1, केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली रखा गया। फरवरी 1990 में कार्यालय का नाम पुनः प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा-1, केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली रखा गया। सितम्बर 1992 में इसका नाम बदलकर 'महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली का कार्यालय' रखा गया।

जुलाई 2009 में विभाजन के परिणामस्वरूप यह कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली तथा महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली के कार्यालय में बँट गया तथा इस कार्यालय का नाम महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली का कार्यालय हो गया।

मार्च 2019 में पुनः विभाजन के परिणामस्वरूप यह कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), नई दिल्ली तथा प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (स्वास्थ्य, कल्याण एवं ग्रामीण विकास), नई दिल्ली के कार्यालय में बँट गया तथा इस कार्यालय का नाम महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), नई दिल्ली हो गया।

अगस्त 2022 में, महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा और कौशल विकास) के कार्यालय और महानिदेशक लेखापरीक्षा (स्वास्थ्य कल्याण और ग्रामीण विकास) के कार्यालय के विलय के परिणामस्वरूप, इस कार्यालय का नाम बदलकर "महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)" कर दिया गया है।

नोट: इस गृह पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं तथा कार्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	महानिदेशक (केन्द्रीय व्यय) का संदेश		5
2	संपादक की ओर से		6
3	कार्यालय में	श्री वेद प्रकाश फोन्दणी	7
4	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी	श्री सत्यपाल	14
5	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी	श्री बृजेश कुमार	16
6	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी	श्री बसंत कुमार चौधरी	18
7	सेवानिवृत्ति के विभिन्न चरण	सुश्री शोभा रमन	19
8	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	सुश्री रुचि	22
9	सकारात्मक सोच	सुश्री किरण मोंगा	25
10	क्यों दरका जोशीमठ ?	सुश्री मीना	27
11	आने वाली पीढ़ी की चिंता	सुश्री दीप्ति दीक्षित	30
12	जिंदगी से कुछ बातें करते हैं	श्री शेखर कौशिक	32
13	संभालो जीवन को	सुश्री किरण मोंगा	33
14	ठिकाना श्री गोविंद सिंह मंदिर, राजस्थान	सुश्री रुचि	34
15	स्वामी विवेकानंद व तत्वज्ञान की उनकी मीमांसा	श्री अमित कुमार हड़ोंदिया	37
16	समाज सेवा	सुश्री नीलम	41
17	परम बासभक्त कर्मचारी	श्री शेखर कौशिक	43
18	दिल्ली में प्रदूषण की समस्या: एक अवलोकन एवं समाधान	सुश्री संजना सोनी	45

19	ग्लोबल वार्मिंग	श्री दीपक तोमर	46
20	प्रोद्योगिकी क्या है?	श्री राहुल नोगीया	48
21	प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ	श्री राहुल नोगीया	50
22	तनाव मुक्त जीवन के सूत्र	श्री राहुल नोगीया	51
23	जिंदगी	सुश्री पूजा	53
24	कल्याण अनुभाग की गतिविधियां	श्री लोकेश कुमार	55

# संदेश



इस कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका निर्झर के 48वें अंक और प्रथम बार वर्ष में इसके दूसरे संस्करण को प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

मानव एवं समाज के विकास के लिए ही नहीं अपितु जिंदगी को रुचिकर बनाने हेतु साहित्यिक सृजनता अति महत्वपूर्ण है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्मिकों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में इस पत्रिका ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पत्रिका के 48 वें अंक के कुशल सम्पादन हेतु संपादक एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पत्रिका के लिए अपना बहुमूल्य योगदान देते रहेंगे।

महानिदेशक लेखापरीक्षा  
(केन्द्रीय व्यय)

# संपादकीय



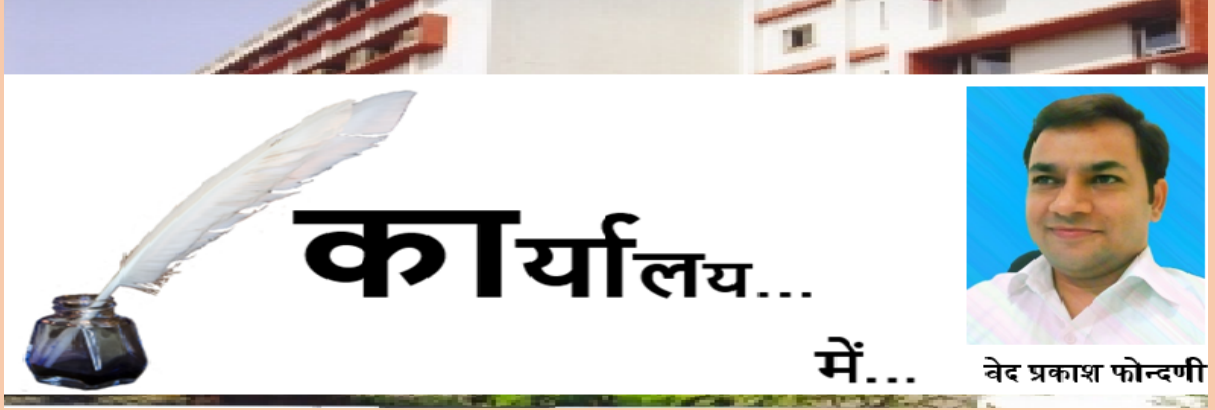
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली की हिन्दी पत्रिका "निर्झर" के 48 वें अंक को सुधी पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

प्रसन्नता का एक और कारण यह भी है कि अब हिंदी भाषा को समर्पित यह निर्झर वर्ष में दो बार अपने कल-कल करते झरने की सुगंधमय बूंदों से आपके तन-मन को भिगोने के लिए व्याकुल है, भाव यह है कि आपकी अपनी यह निर्झर पत्रिका वार्षिक से छमाही हो गई है। इसके लिए एक ओर जहां गुण-अवगुण की समझ रखने वाले गुणी पाठकों का पत्रिका के प्रति अत्यधिक स्नेह और उत्कंठा कारण रही है वहीं दूसरी ओर हमारे विद्वान रचनाकार हार्दिक प्रशंसा के पात्र हैं जो अपनी दैनिक व्यस्तताओं के बावजूद निर्झर पत्रिका के निर्बाध बहाव में अपना बहुमूल्य व रचनात्मक योगदान देकर कृतार्थ करते रहते हैं। पत्रिका परिवार ऐसे गुणी पाठकों और कलम-साधकों के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता है।

दृष्टि देखना चाहे तो खुशी के कारणों की कमी नहीं होती हमारे इर्द-गिर्द। ऐसे ही एक अन्य कारण-अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के शुभ अवसर पर, मैं कार्यालयस्थ समस्त स्त्री-शक्ति को शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं और कार्यालय के साथ-साथ पत्रिका में उनके योगदान की भूरिशः प्रशंसा करता हूं।

पत्रिका के सफल सम्पादन में योगदान देने वाले सभी कर्मियों का अभिनंदन करता हूं और आशा करता हूं कि आगे भी, इसी प्रकार लेख/कहानी/कविता इत्यादि रचनाओं के माध्यम से पत्रिका पर अपना निश्चल स्नेह लुटाते रहेंगे।

सतीश कुमार  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)



**भ**ारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग (IA&AD) का महत्व ऐतिहासिक है। यह भारत की उन कुछ चुनिंदा संस्थाओं में से है जिसका इतिहास 150 से अधिक वर्षों का है। राष्ट्र के महत्वपूर्ण घटक यानि वित्तीय प्रबंधन के सुचारु संचालन में इस विभाग की अनन्यतम भूमिका किसी से छुपी नहीं है। संवैधानिक संस्था का दर्जा देते हुए हमारे संविधान-निर्माताओं ने इस विभाग के देश के प्रति महत्व को भलीभाँति चिन्हित किया था। विभाग के दो मुख्य घटकों – लेखा एवं लेखापरीक्षा के एकीकरण के उपरांत, 16 नवम्बर सन् 1860 को पहले महालेखापरीक्षक की नियुक्ति का दिन भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के लिए एक महत्वपूर्ण तथा अविस्मरणीय स्मृति रही है। विभाग ने इसी दिन अर्थात् 16 नवम्बर को ऑडिट दिवस के रूप में विगत वर्ष 2021 से मनाना प्रारंभ किया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र ने 16 नवंबर 2021 को अपना पहला ऑडिट दिवस माननीय प्रधानमंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में मनाया।

### ऑडिट दिवस 16 नवम्बर को ही क्यों?

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट, 1858 के अंतर्गत बंगाल, मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लेखा विभाग के विलय के बाद 1860 में प्रथम महालेखापरीक्षक ने अपना कार्यभार संभाला था। इसलिए विचारपूर्वक निर्णय लिया गया कि लेखापरीक्षा के ऐतिहासिक और संवैधानिक महत्व को याद करने के लिए, विगत कई वर्षों में

शासन, पारदर्शिता और जवाबदेही में लेखापरीक्षा के योगदान को चिह्नित करने के लिए तथा जनसामान्य के मध्य लेखापरीक्षा संबंधी जागरूकता लाने के लिए, प्रतिवर्ष 16 नवम्बर को ऑडिट दिवस के रूप में मनाया जाए।

### द्वितीय ऑडिट दिवस

विगत वर्ष की भांति ही या कहा जाए कि और भी अधिक उत्साह के साथ 16 नवम्बर 2022 को द्वितीय ऑडिट दिवस भी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के मुख्यालय अर्थात् भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर, माननीय उपराष्ट्रपति महोदय द्वारा कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन किया गया। माननीय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा उनका पौधा भेंट द्वारा स्वागत किया गया साथ ही स्मृतिचिन्ह देकर माननीय अतिथि का आतिथ्य सत्कार किया गया। इस अवसर पर माननीय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा विभाग की न केवल ऐतिहासिक यात्रा, महत्व, चुनौतियाँ वर्णित की गईं बल्कि तमाम उपलब्धियों का भी संक्षेप में परिचय दिया गया। उपरांत, माननीय उपराष्ट्रपति महोदय ने भी अपने उद्बोधन में विभाग की अनेक उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए कहा कि भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग जैसी संस्था के बिना देश में सुशासन (good governance) की कल्पना भी नहीं की जा सकती। निःसंदेह,



राष्ट्र-प्रमुखों द्वारा विभाग का और उसके कार्यों का इस प्रकार का सटीक व सार्थक मूल्यांकन

करना, न केवल हृदय को आल्हाद से भर देता है बल्कि बेहतर काम करने की भी प्रेरणा देता।

**ऑडिट दिवस की ही निरन्तरता में** भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के देश भर में विद्यमान सभी लेखा एवं लेखापरीक्षा कार्यलाओं ने 16 नवम्बर से 22 नवम्बर तक ऑडिट सप्ताह समारोह को बहुत ही उत्साह और प्रसन्नतापूर्वक मनाया। कार्यालय भवन तो इस प्रकार सजे हुए थे मानो किसी नवयौवना द्वारा सोलह श्रृंगार किया हुआ हो। दिल्ली-स्थित एजीसीआर-भवन की नयनाभिरामी छटा भी देखते ही बनती थी। इस अवसर पर संवाद, कार्यशालाओं, परिचर्चाओं, खेल-कूद आयोजनों तथा अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे गीत/संगीत/नृत्य, भाषण, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से कर्मचारियों और अधिकारियों ने न केवल आपसी सामंजस्य का उदाहरण प्रस्तुत किया बल्कि लोकहित में सत्यनिष्ठ रहने का भी संकल्प एक साथ, एक स्वर में दोहराया।



**ऑडिट दिवस और ऑडिट सप्ताह समारोह** के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम मनाने की श्रृंखला में ही दिनांक 20.11.2022 को देश की राजधानी दिल्ली में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय, नई दिल्ली



(श्रीमती सौम्या परिहार, निदेशक (प्रशासन) अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए)

के प्रांगण में जनसामान्य को लेखापरीक्षा के महत्व से अवगत करने के उद्देश्य से तथा वॉक फॉर ऑडिट अवेयरनेस (walk for audit awareness) का संदेश देने के लिए एक विशाल वॉकथॉन (walkathon) का आयोजन किया गया। इसके लिए भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के दिल्ली स्थित सभी लेखापरीक्षा कार्यालयों तथा अंतर्राष्ट्रीय सूचना पद्धति एवं लेखापरीक्षा केंद्र (आईसीसा), नोएडा ने मुख्यालय

की सरपरस्ती में सहभागिता की। कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय, नई दिल्ली ने पूरे वॉकथॉन कार्यक्रम के दौरान एक कुशल मेजबान की भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

**वॉक फॉर ऑडिट अवेयरनेस/वॉकथॉन** के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती

मीनाक्षी लेखी, माननीया संस्कृति राज्य मंत्री, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यक्रम की

शोभा बढ़ाई। माननीया मंत्री महोदया ने कार्यक्रम में मात्र शिरकत ही नहीं की बल्कि किसी भी जुझारू ऐथलीट की भांति 4-5 किलोमीटर के समूचे वॉकथॉन कॉरीडोर का आगे बढ़कर नेतृत्व किया। माननीय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय, नई दिल्ली ने अन्य सभी गणमान्यों, विभागाध्यक्षों सहित, लगभग 1500 अधिकारियों/कर्मचारियों की सहभागिता के साथ वॉक फॉर ऑडिट आवेयरनेस के संदेश वाहक

वॉकथॉन को सफलतापूर्वक पूरा किया और समाज को यह संदेश देने में सफल रहे कि सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास बनाए और बढ़ाए रखने के लिए सबका प्रयास कितना आवश्यक है तथा इस लक्ष्य प्राप्ति के पथ पर भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग सम्पूर्ण कर्तव्यपरायणता के साथ निरंतर अग्रसर है।

### वॉकथॉन कार्यक्रम की प्रमुख झलकियां

वॉकथॉन कार्यक्रम का श्रीगणेश अपने निर्धारित समय अर्थात् प्रातः 8.00 बजे हुआ। दिल्ली के सभी लेखा तथा लेखापरीक्षा कार्यालयों के लगभग 1500 कर्मी जोश-ओ-खरोश से लबरेज सुबह 7.30 बजे तक ही एजीसीआर भवन के प्रांगण में एकत्रित हो गए। महानिदेशक महोदय एवं निदेशक (प्रशासन) के दिशानिर्देशानुसार, कार्यक्रम का मंच-संचालन आलेखकर्ता द्वारा किया गया।

**भारतीय सनातन संस्कृति में** आगत के स्वागत की परम्परा अतिप्राचीन है। माननीया मुख्य अतिथि के आगमन पर महानिदेशक, केन्द्रीय व्यय द्वारा उनका हार्दिक अभिवादन किया गया। सम्माननीय मेहमान द्वारा भी उसी गर्मजोशी के साथ अभिवादन का अंगीकार हुआ:



(मुख्य अतिथि के आगमन पर अभिवादन करते हुए महानिदेशक, केन्द्रीय व्यय व अन्य गणमान्य)

आतिथ्योचित जलपानोपरांत, सर्वप्रथम मुख्य अतिथि श्रीमती मीनाक्षी लेखी, माननीया संस्कृति राज्य मंत्री का स्वागत सुश्री मीनाक्षी शर्मा, उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा पौधा-भेंट कर किया गया। तदुपरांत, महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय द्वारा मुख्य अतिथि का उपहार देकर सम्मान किया गया:



(मुख्य अतिथि, श्रीमती मीनाक्षी लेखी का स्वागत करती हुई  
सुश्री मीनाक्षी शर्मा, उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक)

(मुख्य अतिथि श्रीमती मीनाक्षी लेखी का सम्मान करते हुए  
श्री राजीव कुमार पाण्डेय, महानिदेशक)



आवश्यक आतिथ्य सत्कार के पश्चात् मुख्य अतिथि सहित सभी गणमान्य वॉकथॉन कार्यक्रम का विधिवत् श्रीगणेश करने हेतु flag off करने के लिए कार्यालय निकास द्वार पर पहुंचे। वहाँ पर वॉकथॉन कार्यक्रम के आरंभ होने की

प्रतीक्षा कर रहे लगभग 1500 लेखापरीक्षा-वीरों के द्वारा पहले राष्ट्रगान गाया गया और फिर माननीया मुख्य अतिथि द्वारा वॉकथॉन को flag off किया गया:



(Flag off दिखाकर वॉकथॉन को रवाना करती हुई माननीया मुख्य अतिथि महोदया)

कहते हैं, "शब्दों से कहीं बेहतर तस्वीरें बोलती हैं।" मन में वॉक फॉर ऑडिट आवेयरनेस का संदेश लिए हुए और तन अर्थात् जुबां पर आलेखकर्ता के 'ऑडिट-वीर' गीत की निम्न प्रेरक पंक्तियाँ-  
"लोकहित में सत्यनिष्ठा वाले हम; लोक-हिय में सुप्रतिष्ठा वाले हम।  
अंत्योदय का लक्ष्य हासिल होने तक; मिल सभी, अनथक चलाएं तीर हम।।  
लेखा अरु लेखापरीक्षा - वीर हम; आओ संवारें देश की तकदीर हम...-

गुनगुनाते हुए वॉकथॉन के हमारे लेखापरीक्षा-वीरों की ऐसी ही कुछ जीवंत तस्वीरें पाठकों के विश्लेषणार्थ प्रस्तुत हैं:



(वॉकथॉन के लिए उमड़ा लेखापरीक्षावीरों/ऑडिटवीरों का सैलाब)

लोकधन पर कुनज़रों का काल हम; भरत-भारत-भारती का भाल हम।  
चलो चलें करें जागरुक जन मन सभी; आओ फैलाएं उजाला, धीर हम।।  
लेखा अरु लेखापरीक्षा-वीर हम; आओ संवारे देश की  
तकदीर हम..





(लेखापरीक्षा-वीर, मानो कह रहे हों – कदम कदम बढ़ाए जा/ खुशीके गीत गाए जा/ ये जिंदगी है कौमकी/ तू कौम पर लुटाए जा)

**वॉकथॉन के दौरान,** श्रीमती मीनाक्षी लेखी, माननीया संस्कृति राज्य मंत्री मीडिया से भी मुखातिब हुईं। उन्होंने कहा, “सरकारी काम-काज में पारदर्शिता लाने और सरकार को सही रास्ता दिखाने में सीएजी विभाग का योगदान सराहनीय है”। उन्होंने आगे कहा, “जनता के बीच यह स्पष्ट संदेश जाना चाहिए कि सरकार के किसी विभाग में यदि कोई गड़बड़ी हो तो उसकी जांच के लिए सरकार के अंदर ही सीएजी विभाग के रूप में एक सुदृढ़ व्यवस्था है”।



इस अवसर पर दूरदर्शन से बातचीत में माननीय महानिदेशक महोदय ने बताया कि भारत के शासन के अंदर पारदर्शिता व सुशासन लाने में और सार्वजनिक प्रशासन के क्षेत्र में स्वच्छता तथा शुचिता लाने में भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है और इसी संदेश को आम लोगों तक

पहुंचाने के लिए ऑडिट दिवस के अवसर पर वॉकथॉन का आयोजन किया गया।

### वॉकथॉन कार्यक्रम का समापन

वॉकथॉन कार्यक्रम की समाप्ति पर, कार्यालय-भवन के प्रांगण में कुछ विश्राम के क्षणों का आनन्द लेते अधिकारी/कर्मचारीगण:



अंत में, अगले वर्ष ऑडिट दिवस पर पुनः मिलने तथा इस दौरान राष्ट्र-प्रगति के कुछ और मील के पत्थरों को छूने की दृढ़ इच्छा हृदय में संजोए हुए, सभी लेखा तथा लेखापरीक्षा मित्रों ने अपने-अपने निवास स्थानों को प्रस्थान किया। 'अंत भले का भला' कहावत को चरितार्थ होता देख एक सुखद

अनुभूति तब हुई जब कार्यक्रम के अवसान पर अपने गंतव्य निवास को जाते हुए आईएएण्डएडी से कुछ अनजान मित्र भी वॉकथॉन कार्यक्रम के प्रेरक-गीत "ऑडिटवीर" की निम्न पंक्तियाँ सुने गए:

*आओ संवारेँ देश की तकदीर हम;*

*लेखा अरु लेखापरीक्षा-वीर हम..*

\*\*\*

कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2022 के दौरान 'भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाले लेख-

## भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी



श्री सत्य पाल

### “प्रस्तावना”

भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट-आचरण जो दो शब्दों से मिल कर बना है भ्रष्ट+आचार। परन्तु आज के संदर्भ में अधिकतर इसका प्रयोग रिश्वतखोरी के लिए ही प्रायः किया जाने लगा है। यद्यपि भारत देश की परम्परा सदियों से आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों की रही है और हमें बचपन से ही सुदृढ़ नैतिक मूल्यों और अपने देश की शानदार ऐतिहासिक विरासत के बारे में ज्ञान अपने परिवार के अभिभावकों और घर के बुजुर्गों के माध्यम से कहानियों, लोक कथाओं, जातक कथाओं ऐतिहासिक महापुरुषों की जीवन गाथाओं के रूप में प्रदान किए जाते रहे हैं तथापि सामाजिक जीवन में युवावस्था के बाद जब आजीविका कमाने के लिए मनुष्य समाज में अपना स्थान बनाने के लिए प्रतिबद्ध होता है तो सामाजिक ताने बाने में रची बसी प्रणाली (System) उसके नैतिक मूल्यों पर कुठाराघात करते हैं और गाहे बगाहे उसे उन मूल्यों को तिलांजलि देकर भ्रष्टाचार की शरण में जाने की ओर विवश करते हैं। इन्हीं विपरीत परिस्थितियों में ही मनुष्य के दृढ़ निश्चय एवं नैतिक मूल्यों से समझौता न करने के दृढ़ विश्वास की परीक्षा होती है। चूंकि जीवन के नैतिक मूल्यों पर दृढ़ता से खड़े रहने और विषम परिस्थितियों में भी जीवन के दोराहों पर मजबूती से खड़े रहने से ही विराट व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण संभव है। भ्रष्टाचार चाहे किसी भी रूप में विद्यमान हो, उसका सम्पूर्ण उन्मूलन केवल नैतिक मूल्यों पर दृढ़ निश्चय से खड़े रहने से ही संभव है।

### भारत की राजनीति में भ्रष्टाचार:-

प्रायः यह देखने में आया है कि भ्रष्टाचार की गंगा ऊपर से नीचे की ओर बहती है। यदि किसी भी राष्ट्र या संगठन के कर्णधार भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं तो उनके मातहत कार्य करने वाले लोग भी उस ओर कार्य करने के लिए प्रभावित होते हैं। भारत में राजनीति और राजनैतिक नेताओं में भ्रष्टाचार सर्वविदित है और विडंबना यह है कि ऐसे नेताओं और राजनैतिक संगठनों को महिमामंडित भी किया जाता है। बावजूद इसके लिए कई बड़े राजनेता भ्रष्टाचार के आरोपों में न्यायपालिका द्वारा दोषी भी करार दिए जा चुके हैं व कइयों पर भ्रष्टाचार के मामले विचाराधीन एवं लम्बित है। फिर भी ऐसे नेताओं का सामाजिक/राजनैतिक बहिष्कार लोगों द्वारा न किए जाने से वे पुनः उसी परंपरा की परिपाटी पर उतर जाते हैं। इसका निदान यही है कि जनता को जागरूक होना पड़ेगा। क्योंकि लोकतंत्र में ताकत जनता के हाथ में होती है, यदि जनता ऐसे भ्रष्ट राजनेताओं को चुनकर अपना प्रतिनिधि न बनाए तभी भ्रष्टाचार को रोकने में सफलता मिल सकती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण सभी प्रकार की जानकारी सब के लिए सुलभता से उपलब्ध है जिसका

विवेकपूर्ण उपयोग कर जनता अपने मताधिकार का शक्तिपूर्वक उपयोग कर ऐसे भ्रष्ट नेताओं को सत्ता से बेदखल करके एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकती है। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह देखा जाए तो भ्रष्ट सरकारों को जनता कई बार सत्ता से पदच्युत कर चुकी है।

### सामाजिक दायित्व जनता के परिप्रेक्ष्य में:-

भारतीय जनता यदि अपनी सनातन परंपरा, विरासत, नैतिक मूल्यों का यदि अपने दैनिक कार्यकलापों में प्रयोग करें तो अवश्यंभावी रूप से भ्रष्टाचार पर लगाम लगाई जा सकती है। भारत विभिन्न धर्मों का देश है और सभी धर्म नैतिक मूल्यों और परंपराओं की शिक्षा देता है। अपनी अंतरात्मा की आवाज पर कभी भी कोई अनैतिक कार्य करने से पहले अंतर्मन से आवाज अवश्य आती है और सभी को सही गलत पता होता है। यदि हम स्वयं (जनता) अपने आचरण को ठीक रखेंगे तभी हम 'रिश्वत न ही लो ना दो' का पालन कर पाएंगे।

सरकार द्वारा भी विभिन्न कानूनों के माध्यम से जनता को जागरूक रखने और कदम उठाने के लिए तैयार किया गया है। जैसे सूचना का अधिकार अधिनियम जिसके द्वारा आम जनता को सरकार से सम्बन्धित अधिकतर मामलों की जानकारी प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त सूचना प्रणाली में एक क्रान्ति आ चुकी है व हर प्रकार की सरकारी सेवाएं ऑनलाइन माध्यम से आम जनता को उपलब्ध करवाई जा रही हैं। मानव की आवश्यकता को अधिकाधिक कम करके कम्प्यूटरीकृत ऑनलाइन प्रणाली द्वारा सुविधाएं प्रदान करने के कारण भी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में सफलता मिली है।

भ्रष्टाचार का संपूर्ण उन्मूलन व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है परन्तु जनता के जागरूक रहने एवं स्वयं सामाजिक जीवन में उच्च आदर्शों और नैतिक मूल्यों के पालन करने के फलस्वरूप कमी अवश्य लायी जा सकती है। हम सभी का यह सामाजिक और राजनैतिक दायित्व है कि भ्रष्ट परम्परा का निर्वहन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक/राजनैतिक बहिष्कार करें एवं अपनी विवेकबुद्धि का अनुसरण कर किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार से स्वयं को दूर रखते हुए उच्च जीवन आदर्शों की स्थापना करें व समाज के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत करें तभी हम एक अच्छे नागरिक बन कर एक उन्नत विकसित राष्ट्र की परिकल्पना को साकार कर सकते हैं।



## भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी



श्री ब्रिजेश कुमार

भ्रष्टाचार शब्द दो शब्दों का मेल है: भ्रष्ट तथा आचार जिसका शाब्दिक अर्थ बुराई का आचरण है। भ्रष्टाचार का जन्म प्राचीन समय से है तथा समय के साथ बदलते-बदलते भ्रष्टाचार के तरीके भी बदल गये हैं। आधुनिक समय में भ्रष्टाचार ने बहुत से रूप ले लिये हैं तथा यह जनतंत्र प्रणाली के सुचारू रूप से चलन में बहुत बड़ी बाधा बन गई है। समय के साथ-साथ जनता समझदार बन गयी है। समय-समय पर जनता ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज भी उठाई है। भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए परंतु जनता की भागीदारी न होने के कारण ज्यादातर कदम विफल हो गये।

भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए जितना महत्वपूर्ण सरकार का कदम उठाना है उससे ज्यादा महत्वपूर्ण जनता को उसमें शामिल होना है। पर जनता भ्रष्टाचार को खत्म करने में पूरी तरह से शामिल नहीं हो पाई इसके मुख्य कारण है।

जनता में जागरूकता की कमी है। सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी न होना है। जनता के अंदर भय भी एक कारण है भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज न उठाने का।

परंतु आज के आधुनिक समय में लोकतंत्र प्रणाली के बहाल होने पर जनता को भय से मुक्ति मिली तथा सोशल मीडिया का प्रयोग कर जनता तक पूरी तरह जानकारी पहुँचाने में सरकार तथा मीडिया ने अपना पूरा योगदान दे रही हैं। आज के समय में जनता के हाथ में ताकत है। जिसका प्रयोग जनता भ्रष्टाचार खत्म करने में कर सकती हैं। परंतु बहुत कम जनता ही जानकारी के बावजूद कदम उठा पाती है। कम जानकारी के कारण जनता के हाथ में ताकत होते हुए भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

आज के समय में जैसे-जैसे जागरूकता बढ़ रही है जनता की भागीदारी भी बढ़ गयी है। परंतु कुछ जनता भ्रष्टाचार को अभी भी बढ़ावा दे रही है जैसे घूस देकर काम निकलवाना, कार्यालय में काम करने की देरी, नकल कराना आदि। अगर हम गौर से विश्लेषण करें तो जनता की भागीदारी भी उतनी है जितनी सरकारी कार्यालय या दुसरे कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी की है। यदि हम भ्रष्टाचार से मुक्ति चाहते हैं तो जितना कर्मचारी का योगदान है उतना जनता का भी योगदान होना चाहिए। जनता भ्रष्टाचारी कामों से दूर रहे तथा इसकी शिकायत संबंधित अनुभाग में करें।

जैसा कि भ्रष्टाचार के तात्पर्य से है कि बुराई का आचरण है, तो हमें अच्छाई का आचरण करना चाहिए। जनता को बुराई से दूर रह कर तथा गलत कामों में भागीदारी न करके भ्रष्टाचार के उन्मूलन में सहायता करनी चाहिए। किसी भी बुराई को खत्म करने के लिए हमें पहले अपने अंदर की बुराई खत्म करनी चाहिए।

आज के समय में जहाँ ज्यादातर फैसले जनता की भागीदारी के हिसाब से लिए जाते हैं, तो इस समाज में कुरितियों को खत्म करने के लिए जनता की भागीदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। जनता को अगर लगता है कि कहीं भ्रष्टाचार हो रहा है तो उनको कुछ कदम उठाने चाहिए जैसे-

- भ्रष्टाचार लिप्त कार्यों को बढ़ावा न दें।
- भ्रष्टाचार में सहयोग न दें।

- अपने आस-पास के लोगों को इस बारे में अवगत कराएं।
- संबंधित कार्यालय में इसकी शिकायत दर्ज कराएं।
- शिकायत पर किये गए कदमों के बारे में जानकारी लें।

जनता की भागीदारी में सरकार को भी प्रोत्साहन देना चाहिए इसके लिए सरकार कुछ कदम उठा सकती हैं।

- भ्रष्टाचार लिप्त कर्मचारी को बर्खास्त कर दिया जाना चाहिए।
- जनता में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए।
- संबंधित कार्यालय के बारे में जनता को समय-समय पर अवगत कराना चाहिए।
- उठाए गये कदमों के बारे में अवगत करना चाहिए।

साथ ही साथ सोशल मीडिया को भी कुछ कदम उठाने चाहिए जैसे जनता में जागरूकता बढ़ाना, पूरी जानकारी प्रदान करना, सरकार द्वारा उठाए गए कदमों से अवगत कराना। कुछ कदम जैसे Whistle Blower Act तथा RTI जैसे कदम उठाकर सरकार ने जनता की भागीदारी सुनिश्चित की है।

आज के समय में जितना महत्वपूर्ण सरकार की भागीदारी है उतनी ही महत्वपूर्ण जनता की भागीदारी भी है। अतः जनता को भ्रष्टाचार के उन्मूलन में अपना बहुत बड़ा योगदान देना चाहिए जिससे समाज में फैली इस कुरीति को खत्म किया जा सके जिससे हमारा देश ऊँची बुलंदियों को छू सके।

## भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी



श्री बसन्त कुमार चौधरी

भ्रष्टाचार उन्मूलन में जितना महत्व निरोधक तंत्र, कानून एवं संस्थाओं का है उससे अधिक महत्व इस अभियान में आम जनता की भागीदारी का है। जनता की भागीदारी के बिना भ्रष्टाचार का उन्मूलन संभव नहीं है। क्योंकि सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार की भुक्तभोगी जनता ही है। वह भ्रष्टाचार की जड़ से अच्छी तरह वाकिफ है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन में आम जनता का व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों स्तर पर योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। व्यक्तिगत स्तर पर यदि बात कहें तो अगर कोई व्यक्ति किसी सरकारी पद या कोई ऐसी जगह पर है जहाँ उसे आम जनता की सहूलियत या भलाई के लिए कार्य करना है, तो उसे कार्यों के करने के एवज में कोई घूस नहीं लेनी चाहिए। अगर आप कोई आम नागरिक है तो अपना काम जल्दी कराने या कोई ऐसा काम जो कानूनी रूप से आपके पक्ष में नहीं है, तो उसे कराने के लिए आपको घूस या भ्रष्टाचार का कोई अन्य उपाय नहीं अपनाना चाहिए। ऐसा करने से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। अगर हम सामूहिक स्तर पर भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी की बात करें तो जनता को आपस में मिलकर ऐसी सामूहिक संस्था बनाना चाहिए जो आम लोगों को उनके अधिकारों तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन के उपायों के बारे में जागरूक करें। क्योंकि शिक्षित एवं जागरूक लोगों का समूह अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहता है जिसकी वजह से उनका भ्रष्टाचार करना मुश्किल होता है। अपने अधिकारों के प्रति जागरूक लोग ही भ्रष्टाचार के विरोध में मुखर हो सकते हैं। भ्रष्टाचार के उन्मूलन के संबंध में जनता का महत्व इतना है कि अगर जनता को लगे कि सरकार भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रही है तो वह स्थानीय सरकार से लेकर केन्द्र सरकार तक को बदल सकती है।

इस वर्तमान तकनीकी दौर में सरकार को ऐसे तकनीकी मंचों तथा संस्थाओं को बनाना चाहिए जिससे जनता की निजता की सुरक्षा होने के साथ वह भ्रष्ट गतिविधियों के बारे में सरकार को सूचित कर सकें। इससे लोग आसानी से अपनी बात को उच्च अधिकारियों तक पहुँचा सकते हैं जिससे काफी हद तक भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सकता है। भ्रष्टाचार उन्मूलन में आम नागरिक के महत्व को समझते हुए "विश्व बैंक" जैसे वैश्विक संस्था ने अपना "इंटीग्रीटी ऐप" बनाया है, जिससे आम लोग विश्व बैंक द्वारा पोषित योजनाओं में हो रहे भ्रष्टाचार की जानकारी दे सकते हैं। इसी तरह भारत में भी आइ पैड ब्राइब, नामक ऑनलाइन प्लेटफार्म पर 3 लोग अपना नाम बताए बिना अपने आस-पास हो रहे भ्रष्टाचार की जानकारी दे सकते हैं।

अतः भ्रष्टाचार उन्मूलन में निरोधक इकाइयों संस्थाओं तथा कानून के साथ-साथ जनता की भागीदारी बहुत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

## सेवानिवृत्ति के विभिन्न चरण



सुश्री शोभा रमन

अपने जीवन यापन के लिए दशकों तक काम करने के बाद, जब आप सेवानिवृत्त होंगे, तो आपको कई तरह की भावनाओं का अनुभव होगा। जैसा कि जीवन में किसी भी बड़े बदलाव के साथ होता है, आप पाएंगे कि जैसे-जैसे आप एक नई दिन-प्रतिदिन की वास्तविकता में ढलते जाते हैं, वैसे-वैसे अलग-अलग चरण होते हैं।

कल्याण अनुभाग द्वारा लगभग हर महीने सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन किया जाता है और कल्याण अधिकारी के रूप में, मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे इसमें भाग लेने और सेवानिवृत्त लोगों को सम्मानित करने का अवसर मिलता रहा है।

अपने जीवन का अधिकांश समय इस कार्यालय में बिताने वाले कर्मचारियों और अधिकारियों को अलविदा कहते हुए प्रत्येक क्षण ने मुझे एहसास कराया कि एक सेवानिवृत्त व्यक्ति अपने साथ भविष्य के लिए क्या भावनाएँ/उम्मीदें लेकर चल रहा होगा/ होगी।

विचारों के इस प्रवाह को अपने दिमाग में रखते हुए मैंने इनको अपने शब्दों में पिरोने की कोशिश की है

क्या हम सेवानिवृत्ति के बाद अपने जीवन के लिए तैयार हैं? हमारे विचारों में कई तरह के विचार और सवाल आते हैं कि रिटायरमेंट के बाद हम क्या करेंगे, उदाहरण के लिए

- क्या मैं यात्रा करूँगा/करूँगी?
- क्या मैं ज्यादातर समय घर पर ही बिताऊँगा/ बिताऊँगी?
- कुछ नहीं करना और केवल आराम करना पसंद करूँगा/करूँगी?
- क्या पक्षियों को दाना डालना या मुझे बागवानी करना अच्छा लगेगा?
- क्या मुझे अपने पोते-पोतियों के साथ समय बिताना अच्छा लगेगा? या फिर कुछ और?

विचार करने के लिए कई मुद्दे हैं। रिटायरमेंट शब्द अपने आप ही दर्शाता है कि हमें रिटायरमेंट के बाद क्या करना है और हम रिटायरमेंट के बाद क्या करने की योजना बना सकते हैं। अपने रिटायरमेंट की प्लानिंग करने से पहले अपने जज्बे और जुनून के बारे में सोचें और उस काम को ज़रूर करें जो कि आप हमेशा से करना चाहते थे।

अंग्रेजी में R+E+T+I+R+E शब्द प्रासंगिक कारकों का एक आदर्श प्रतिनिधि है जब आप विचार करते हैं कि यह क्या दर्शाता है।

**R- (Review)** अपने अतीत को प्रतिबिंबित करने का समय। प्रत्येक को सफलता अलग तरह से मिली है, अलग-अलग यादें हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं, या कुछ असफलताएँ हैं। रिटायर होने के बाद जीवन को पीछे मुड़कर देखना आपको याद दिलाएगा कि जीवन जितना आपने शुरू में सोचा था उससे कहीं अधिक सार्थक है।

E- (Emotion) भावनाएँ जो एक व्यक्ति महसूस करता है जब रोजगार समाप्त हो जाता है और अब काम नहीं कर रहा है, नौकरी के शीर्षक, कार्यस्थल और सहकर्मियों की शून्यता आपको अलगाव की भावना के साथ छोड़ सकती है और मन की एक अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण भावनात्मक समायोजन की आवश्यकता होती है।

T - (TRAVEL) यात्रा करना और आस-पास घूमना यादों को वापस लाने का एक सुखद तरीका हो सकता है। अपने पुराने प्राथमिक विद्यालय में जाना, अपने पहले कार्यस्थल या विदेश में अवकाश यात्राएं आपके अनुभवों को बेहतर बना सकती हैं और आपको या परिचितों को बहुत संतुष्टि प्रदान कर सकती हैं। यह आपको बदलाव को बेहतर ढंग से अपनाने में भी मदद करेगा।

- (Induce) युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन करने के लिए सत्यनिष्ठा और नैतिकता को बनाए रखें। आप समाज को सकारात्मक दिशा में आकार देने में मदद करने के लिए एक रोल मॉडल के रूप में अपने संचित अनुभव का उपयोग कर सकते हैं।

R- (Religion) धर्म सच्ची खुशी की ओर एक मार्ग है। आपके धर्म सेवानिवृत्ति की अवधि आत्मज्ञान प्राप्त करने और गहरे आध्यात्मिक सिद्धांतों के साथ अपने मूल्यों को पाटने का एक बड़ा अवसर प्रस्तुत करती है।

E - (Exercise) व्यायाम सेवानिवृत्त लोगों के लिए, व्यायाम को सेवानिवृत्ति जीवन का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। पहले से तैयारी शुरू करने की सलाह दी जाती है; अपने शारीरिक स्वास्थ्य की देखभाल करने की उपेक्षा न करें या केवल अल्पकालिक विचारों पर ध्यान केंद्रित करें।

उपरोक्त बातों के अलावा हमें कई अन्य चीजों की पहले से ही योजना बनाने की आवश्यकता है जिनमें निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं : -

खर्चें आपकी आर्थिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण मुद्दा हो सकती है क्योंकि आपकी आय अब बहुत कम है जबकि खर्चें जारी हैं। यदि आपके खर्च अभी भी उसी स्तर पर हैं या बढ़ रहे हैं, तो बिना पूर्व वित्तीय तैयारी के चीजें चुनौतीपूर्ण होंगी। तनाव और तंग वित्तीय स्थिति का असर अन्य चीजों पर भी पड़ सकता है। इसलिए, कुछ वित्तीय लेखांकन क्रम में होना चाहिए। अपनी आय और व्यय और परिणामी संतुलन देखें। खर्चों को अपने साधनों के भीतर रखें। कपड़ों, सौंदर्य प्रसाधनों, खान-पान, शराब, सिगरेट और मनोरंजन स्थलों पर अत्यधिक खर्च करने जैसे फिजूलखर्ची से बचना चाहिए। यदि आपका परिवार है, तो आपको अपने बच्चों की परवरिश, गृह ऋण, कार ऋण आदि जैसी कई अन्य चीजों के लिए आर्थिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है।

सामाजिक मनुष्य स्वभाव से ही मिलनसार होते हैं। सेवानिवृत्त लोगों को खुद को अलग नहीं करना चाहिए बल्कि सामाजिक रहना चाहिए। घर मत रहो; बाहर जाओ और लोगों और दोस्तों से मिलो। सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लें। यह जीवन में मसाला जोड़ता है। हो सकता है कि आप कोई शौक ढूँढना चाहें या किसी ऐसी चीज़ में शामिल होना चाहें जो आप हमेशा से करना चाहते थे लेकिन कभी समय नहीं मिला। उदाहरण के लिए, यह नृत्य पाठ, कंप्यूटर पाठ या ज्योतिष में एक पाठ्यक्रम हो सकता है। कुछ करने के लिए और दोस्तों के साथ सामूहिकरण करने के लिए ढूँढना बहुत अच्छा है। यदि आप कोई व्यवसाय चलाते हैं, तो यह ऐसा होना चाहिए जिसे आप आसानी से प्रबंधित कर सकें। जबकि अपने परिवार के साथ समय बिताना महत्वपूर्ण है, आपको दूसरों के साथ विशेष रूप से युवा पीढ़ी के साथ आराम से मेलजोल करने में भी सक्षम होना चाहिए। आपको स्वयं को समूह के बॉस के रूप में स्थापित नहीं

करना चाहिए, और न ही सलाह के लिए अनुरोध किए जाने तक दूसरों को निर्देशित करने का प्रयास करना चाहिए। असामान्य विशेषाधिकार मांगने के लिए अपनी वरिष्ठता का उपयोग न करें। अतीत के बारे में बात करना या रहना भी अच्छा नहीं है। निरंतर ध्यान की मांग करना भी वांछनीय नहीं है। रोना कल्पना बंद करो। अपनी सेवानिवृत्ति के दौरान, अपना समय अपने जीवनसाथी और परिवार के लिए एक सकारात्मक योगदानकर्ता के रूप में व्यतीत करें। एक रोल मॉडल बनें। अखंडता और नैतिक मूल्यों को उजागर करें। दूसरों से सम्मान अर्जित करें।



शोभा रमन, कल्याण अधिकारी

# नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति



सुश्री रूचि कुमारी

शिक्षा किसी भी देश और समाज के विकास का महत्वपूर्ण आधार होता है। शिक्षा के बलबूते ही देश का विकास तेजी से किया जा सकता है। समय के साथ शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक होता है ताकि देश की उन्नति सही तरीके से और तेजी से हो सके।

आजादी के बाद भारत में पहली शिक्षा नीति सन 1986 में बनाई गई थी जो मुख्यतः लॉर्ड मैकाले की अंग्रेजी प्रधान शिक्षा नीति पर आधारित थी। इसमें सन 1992 में कुछ संशोधन भी किए गए किंतु इसका ढांचा मूलतः अंग्रेजी माध्यम शिक्षा पर ही केंद्रित रहा। पहले की शिक्षा प्रणाली मूल रूप से सीखने और परिणाम देने पर केंद्रित थी। विद्यार्थियों का आकलन प्राप्त अंकों के आधार पर किया जाता था। यह विकास के लिए एक एकल दिशा वाला दृष्टिकोण था। अतः इन कमियों को दूर करने के लिए **नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** लाने की आवश्यकता पड़ी।

वर्ष 2020 में संसद में नई शिक्षा नीति को लाने के लिए बिल पास किया गया। नई शिक्षा नीति एक बहु-विषयक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर केंद्रित है जिसका उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की ऐसी पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए आने वाली आवश्यकता को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और उसके सांस्कृतिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य, जिसके अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था उसके नियमों का वर्णन सहित सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमता के विकास पर जोर देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से ना केवल साक्षरता, उच्च स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधित संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए। भारत सरकार द्वारा 2030 तक नीतिगत पहलुओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति तैयार की गई है। यह विद्यार्थी की आत्म-क्षमताओं और अवधारणा पर आधारित सीखने की प्रक्रिया है, न कि रटने वाली प्रक्रिया।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ढांचा

वर्तमान नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की जगह ले चुकी है। नई शिक्षा नीति के बारे में चर्चा जनवरी 2015 में कैबिनेट सचिव टीएसआर सुब्रमण्यन के नेतृत्व में समिति द्वारा शुरू की गई थी और 2017 में समिति द्वारा एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। 2017 की रिपोर्ट के आधार पर बनाई गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक मसौदा, 2019 में पूर्व इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) प्रमुख कृष्णस्वामी कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में नई टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जनता और हितधारकों के साथ परामर्श के बाद मसौदा नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई थी। नई शिक्षा नीति 29 जुलाई, 2020 को अस्तित्व में आई।

## नवीन शिक्षा नीति, 2020 के महत्वपूर्ण तथ्य

- नवीन शिक्षा नीति-2020 के तहत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर देश की जीडीपी के 6% हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है।
- नई शिक्षा नीति में वर्तमान में सक्रिय 10+2 के शैक्षिक मॉडल के स्थान पर शैक्षिक पाठ्यक्रम को 5+3+3+4 प्रणाली के आधार पर विभाजित करने की बात कही गई है।
- तकनीक शिक्षा, भाषाई बाधताओं को दूर करने, दिव्यांग छात्रों के लिये शिक्षा को सुगम बनाने आदि के लिये तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया गया है।
- इस शिक्षा नीति में छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है।
- कैबिनेट द्वारा 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' का नाम बदल कर 'शिक्षा मंत्रालय' करने की भी मंजूरी दी गई है।
- 3 वर्ष से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये शैक्षिक पाठ्यक्रम का दो समूहों में विभाजन - 3 वर्ष से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये आँगनवाड़ी / बालवाटिका/ प्री-स्कूल के माध्यम से मुफ्त, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण "प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा" की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- 6 वर्ष से 8 वर्ष तक के बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-1 और 2 में शिक्षा प्रदान की जाएगी।
- प्रारंभिक शिक्षा को बहुस्तरीय खेल और गतिविधि आधारित बनाने को प्राथमिकता दी जाएगी।
- नवीन शिक्षा नीति-2020 में कक्षा-5 तक की शिक्षा में मातृभाषा/ स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को अध्यापन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है, साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा-8 और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।
- स्कूली और उच्च शिक्षा में छात्रों के लिये संस्कृत और अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध होगा परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाधता नहीं होगी।
- बधिर छात्रों के लिये राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर पाठ्यक्रम सामग्री विकसित की जाएगी तथा भारतीय संकेत भाषा आई एस एल को पूरे देश में मानकीकृत किया जाएगा।
- नवीन शिक्षा नीति-2020 के तहत भारतीय भाषाओं के संरक्षण और विकास के लिये एक 'भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान' 'फारसी, पाली और प्राकृत के लिये राष्ट्रीय संस्थान (या संस्थान)' स्थापित करने के साथ उच्च शिक्षण संस्थानों में भाषा विभाग को मज़बूत बनाने एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापन के माध्यम के रूप में मातृभाषा/ स्थानीय भाषा को बढ़ावा दिये जाने का सुझाव दिया है।
- इस नीति में प्रस्तावित सुधारों के अनुसार, कला और विज्ञान, व्यावसायिक तथा शैक्षणिक विषयों एवं पाठ्यक्रम व पाठ्येतर गतिविधियों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होगा।
- कक्षा-6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमें इंटरनशिप की व्यवस्था भी दी जाएगी।
- 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) द्वारा 'स्कूली शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा' तैयार की जाएगी।



- नई शिक्षा नीति के तहत एम.फिल कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है ।

### **नई शिक्षा नीति के लाभकारी प्रभाव**

यह सीखने वाले की आत्म-क्षमता, संज्ञानात्मक कौशल पर जोर देता है। यह एक बच्चे को अपनी प्रतिभा विकसित करने में मदद करेगा। पहले छात्रों के पास अध्ययन के लिए केवल एक ही विषय चुनने का विकल्प था, लेकिन अब अलग-अलग विषय चुन सकते हैं, उदाहरण के लिए - गणित के साथ-साथ कला और शिल्प का भी विकल्प चुन सकते हैं। इस नीति का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच नवीन विचारों के समावेश के साथ सहभागिता, महत्वपूर्ण सोच और तर्क करने की क्षमता को विकसित करना है। नई शिक्षा नीति किसी भी विषय को सीखने के व्यावहारिक पहलू पर केंद्रित है, क्योंकि यह अवधारणा को समझने का एक बेहतर तरीका माना जाता है। 2040 तक सभी संस्थान और उच्च शिक्षण संस्थान बहु-विषयक बन जाएंगे।

### **नई शिक्षा नीति के नकारात्मक कारक**

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में, भाषा एक नकारात्मक कारक है क्योंकि शैक्षणिक संस्थानों में प्रत्येक विषय के लिए मातृभाषा की शुरूआत एक समस्या है।
- कभी-कभी एक सक्षम शिक्षक ढूंढना एक समस्या बन जाता है। नवीन शिक्षा नीति-2020 की शुरूआत के साथ एक और चुनौती आती है, जो अध्ययन सामग्री को मातृभाषा में लाता है।
- 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy) के अनुसार, जो छात्र स्नातक की पढ़ाई पूरी करना चाहते हैं, उन्हें चार साल की पढ़ाई करनी होगी, जबकि कोई भी आसानी से दो साल में अपना डिप्लोमा

पूरा कर सकता है। सरकारी स्कूल के छात्रों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं में शैक्षणिक पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा।

### **निष्कर्ष**

नई शिक्षा नीति कई उपक्रमों के साथ रखी गई है जो वास्तव में वर्तमान परिदृश्य की जरूरत है। नीति का संबंध अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास पर ध्यान देना है। यह भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्च गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराकर और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत बनाए समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। इस नीति में परिकल्पित है कि हमारे संस्थानों की पाठ्य चर्चा और शिक्षा विधि जो छात्रों में अपने मौलिक दायित्व और संवैधानिक मूल्य, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका के उत्तरदायित्व की जागरूकता उत्पन्न करें। जितनी जल्दी नई शिक्षा नीति के उद्देश्य प्राप्त होंगे, उतना ही जल्दी हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर करेगा।

# सकारात्मक सोच



सुश्री किरण मोंगा

नव वर्ष के आने पर सभी ओर संकल्प, संकल्प और संकल्प सुनाई पड़ता है। कोई अच्छी पढ़ाई करने का, कोई स्वास्थ्य पर ध्यान देने का, कोई विश्व दर्शन करने का, कोई बुरे व्यसनों से स्वयं को दूर करने का और कोई अपने सपनों को पूरी चेष्टा से साकार करने का संकल्प लेता है। यह एक उचित एवं सराहनीय निर्णय है कि आपने दृढ़ निश्चयी होकर जीवन में कुछ करने की ठानी है। किन्तु इसके साथ यह भी विचारणीय है कि किसी भी कार्य के पहले एवं उसके सफल कार्यान्वयन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण है कि नहीं। क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण की अनुपस्थिति में लक्ष्य तक पहुँचना अति दुर्गम होता है।

अब यह जानना भी आवश्यक है कि सकारात्मक सोच दृष्टिकोण क्या है? सकारात्मक सोच से अभिप्राय है कि किसी कार्य में दक्ष ना होते हुए भी उसे करने की पूर्ण चेष्टा करना एवं अगर असफल रहे तो असफलता को भी स्वीकार करना। अपनी कमजोरियों, कमियों और असफलताओं को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना ही सकारात्मक व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सकारात्मक सोच से आलिप्त व्यक्ति जीवन में किसी भी कार्य को करने से हिचकिचाता नहीं है और शत प्रतिशत ना सही परन्तु एक प्रशंसनीय लक्ष्य तक अवश्य पहुँच जाता है।

आगे यह जानना भी आवश्यक है कि इस सकारात्मक सोच को कैसे प्राप्त किया जाए, कैसे सकारात्मक व्यक्तित्व बनाया जाए। इसके लिए कोई अत्यधिक संघर्ष की आवश्यकता नहीं है केवल अधोलिखित कुछ कदमों से ही आप सकारात्मक सोच और व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकते हैं:-

1. सबसे पहले नकारात्मक सोच को अपने मन से निकाल दीजिए। आप किसी कार्य को नहीं कर सकते यह विचार मन में कदापि नहीं आना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य को पूर्ण रूप से नहीं कर सकता परन्तु आंशिक रूप से उसमें सफल होने की क्षमता रखता है। सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़िए सफलता अवश्य मिलेगी।
2. सकारात्मक सोच एवं व्यक्तित्व के विकास के लिये आप किताबों एवं प्रकाशित लेखों की भी मदद ले सकते हैं। बहुत से विश्वव्यापी लेखकों ने लेख प्रस्तुत किए हैं। यह लेखन सामग्री एक फलदायक सूत्र के रूप में प्रयोग में लाई जा सकती है। आधुनिक तकनीकी युग में तो सोशल मीडिया पर सकारात्मक सोच संबंधी लेख, विडियो, प्रेरक वक्ता, इत्यादि बहुतायत में उपलब्ध है। आप इन सबसे जुड़कर, इन्हें सुन कर, अपनी जीवन शैली को इनके अनुसार परिवर्तित कर सकारात्मक सोच के स्वामी बन सकते हैं।
3. इस सोच को प्राप्त करने के लिए स्व चिन्तन/स्व: आकलन करना यह जानने के लिए कि मेरे अन्तः मन में कौन सी बाधा है/ कारण है जो मैं इस कार्य को नहीं कर पा रहा हूँ। विश्वास रखिए कारण ज्ञात होने पर इसका निवारण भी मिलेगा और आप सफल भी होंगे।

4. सकारात्मक सोच के लिए यह भी आवश्यक है कि आप अपने को तनावपूर्ण वातावरण से दूर रखें। जितना सम्भव हो प्रसन्नतापूर्ण, उत्साहवर्धक एवं सुखद आभास देने वाले वातावरण से जुड़कर रहें। अपने मित्रों से, सम्बन्धियों से जुड़े रहें, अपनी परेशानी को शेयर करें। समाधान अवश्य ही मिलते रहेंगे और आप आगे बढ़ेंगे।
  5. सबसे अधिक आवश्यक है कि अपने आपको योग, व्यायाम, ध्यान आदि में लीन करें। क्योंकि ये सभी सकारात्मक जीवन शैली की ओर अग्रसर करने वाले आपके मित्र हैं और आपको अपना उद्देश्य प्राप्त करने में और सपनों को साकार करने में सदैव सहायक सिद्ध होंगे।
- “ नकारात्मक सोच वाले लोग समाज के लिए बोझ बन जाते हैं। अतः बोझ बनने से अच्छा है सकारात्मक सोच रख कर एक उदाहरण बनो”

# क्यों दरका जोशीमठ?



सुश्री मीना

आजकल उत्तराखण्ड में स्थित जोशीमठ सुर्खियों में है। धीरे-धीरे यह शहर एक तरफ से नीचे धस रहा है। स्थानीय लोग डरे-सहमे अपने घरों को टूटते और धंसते देख रहे हैं। आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी किसी के पास ऐसा कोई तरीका नहीं जिससे इस ऐतिहासिक शहर को नष्ट होने से बचाया जा सके। प्रकृति से कब कौन जीत सका है। यह सब जानते हुए भी लोग अन्जान बने हुए थे और आज बहुत हद तक मानवीय भूलों का खामियाजा भुगत रहे हैं। कह सकते हैं जोशीमठ की इस तबाही के लिए राजनीतिक दल, नौकरशाही और स्थानीय जनता, सब समान रूप से जिम्मेदार हैं। यही कारण है कि एक दूसरे पर दोषारोपण के लिए आंदोलन भी शुरू हो गए हैं। जोशीमठ की इस हालत के लिए कोई एन.टी.पी.सी. की जल विद्युत परियोजना को जिम्मेदार मान रहा है, कोई सड़क निर्माण को, कोई कंक्रीट के बोझ को, तो कोई भ्रष्ट नौकरशाही को, लेकिन किसी ने भी पिछली आपदाओं से कोई सबक नहीं लिया। जब भी कोई आपदा आई विशेषज्ञों ने चेताया और एक आधुनिक योजना बनाने की सलाह दी लेकिन किसी ने भी उनकी नहीं सुनी। यदि विशेषज्ञों की सुनी गई होती तो आज आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित जोशीमठ तबाही के मुहाने पर खड़ा नहीं होता।

जोशीमठ में लगभग 900 भवनों में बड़ी-बड़ी दरारें मिली हैं जिसमें से लगभग 200 भवन असुरक्षित क्षेत्र में हैं। जोशीमठ में आपदा प्रभावित 300 परिवारों के 950 सदस्यों को सुरक्षा की दृष्टि से राहत शिविरों में पहुंचाया गया है। भूधंसाव वाले इलाकों में धरती के धंसने की रफ्तार की इसरो द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है, दरार वाले भवनों के चिन्हीकरण का कार्य भी जारी है। असुरक्षित घोषित की गई इमारतों, होटलों, घरों आदि को तोड़े जाने का कार्य केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान की तकनीकी निगरानी में किया जा रहा है।

## जोशीमठ का धार्मिक महत्व :-

पुराणों में जोशीमठ का उल्लेख ज्योतिर्मठ के रूप में मिलता है। जोशीमठ की स्थापना आदि शंकराचार्य ने 815 ईस्वी में की थी। यही पर उन्होंने 'शांकरभाष्य' नामक धर्म ग्रंथ की रचना की थी। आदि शंकराचार्य ने इस स्थान को वेद-पुराणों की ज्योति विद्या के रूप में विकसित



किया। बाद में उनके देह त्यागने के उपरान्त इस मठ के प्रथम शंकराचार्य टोटकाचार्य बने। जोशीमठ को भगवान विष्णु का क्षेत्र माना जाता है। कहा जाता है कि विष्णु अवतार नरसिंह ने असुर संहार के बाद यहीं रहकर अपना क्रोध शांत किया था। इसका उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। बाद में कत्यूर के राजा वसंतदेव ने यहां नरसिंह का मंदिर बनवाया। शीतकाल में भगवान बद्रीनाथ की पूजा इसी मंदिर में होती है। कहा जाता है नरसिंह मंदिर में भगवान नरसिंह की काले पाषाण की जो मूर्ति स्थापित है, उनका बाया हाथ लगातार क्षीण होता जा रहा है, जब वह हाथ पूर्ण क्षीण होकर शरीर से अलग हो जाएगा तब नर और नारायण पर्वतों के गिर कर मिलने से बद्रीनाथ धाम का रास्ता बंद हो जायेगा। तब बद्रीनाथ की पूजा जोशीमठ के निकट भविष्य बद्री में की जायेगी। जोशीमठ से बद्रीनाथ की दूरी 30 कि.मी. है। जोशीमठ को बद्रीनाथ धाम का द्वार कहा जाता है। पहले पैदल यात्री यहीं से होकर बद्रीनाथ धाम जाते थे।

जोशीमठ हिमालय की तलहटी में बसा एक छोटा सा शहर है, यह शहर त्रिशूल पर्वत की उतरती ढलान पर और अलकनंदा नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई लगभग 6100 मीटर है, जबकि त्रिशूल पर्वत की ऊंचाई 7200 फीट है। सबसे चिन्ता वाली बात है कि जोशीमठ भूकंप प्रभावित जोन-5 में आता है। हेमकुंड साहिब जाने वाले यात्री भी जोशीमठ में ही रुकते हैं। परिणामस्वरूप पिछले कुछ सालों में यहां काफी होटलों का निर्माण हुआ है।

जोशीमठ का जितना धार्मिक महत्व है उससे कहीं ज्यादा सामरिक महत्व है। सन 1962 के युद्ध में चीन से लोहा लेते वक्त भारतीय सेना जोशीमठ में ही आकर रुकी थी। चीनी सीमा पर स्थित नीनीमाणा गांव जाने का मार्ग भी जोशीमठ से होकर ही गुजरता है। एल.ए.सी. पर देश की सुरक्षा में रत आर्मी का कैंप भी जोशीमठ में ही है। यही कारण है कि 900 करोड़ की लागत से जो चार धाम रोड़ बन रहा है वह जोशीमठ से होकर ही गुजरता है और भारतीय सेना की सीमा तक आवाजाही करने, रसद और हथियार आदि पहुंचाने के लिए चार धाम रोड़ की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है।

सबसे अहम सवाल है कि क्या अब जोशीमठ को बचाया जा सकता है या नहीं? 1975 में मिश्रा आयोग बना था, जिसने उतराखण्ड के इस क्षेत्र में आने वाली आपदाओं पर एक रिपोर्ट तैयार की थी। उसमें साफ-साफ लिखा है कि जोशीमठ हिमालय के सूखे ग्लेशियर की रेतीले ढलान पर बसा है और यह कभी भी दरक सकता है, यहां बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण की जरूरत है। परिणामस्वरूप कुछ समय तक यहां पेड़ लगाने का अभियान भी चला, पर इसके परिणाम जमीन पर कम कागजों में अधिक दिखाई दिए। समय बीतने के साथ जिम्मेदार लोग भूल गए कि एक दिन जोशीमठ का अस्तित्व खतरे में आ सकता है।



पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाला हर व्यक्ति जानता है कि पहाड़ में रहने का क्या मतलब होता है? हर पहाड़ की बोझ उठाने की अपनी एक सीमा होती है। हर पहाड़ एक सीमा तक ही बोझ सह सकता है। अगर पहाड़ों के साथ प्रकृति के विरुद्ध जोर जबरदस्ती होगी तो वह अपना रोद्र रूप दिखाएंगे ही। वही अब जोशीमठ में भी दिख रहा है। यहा आबादी के साथ-साथ ऊंची-ऊंची इमारतों का बोझ बढ़ता ही चला गया। आजादी के समय जोशीमठ की आबादी मात्र 5000 भी नहीं थी लेकिन आज यहां की आबादी

50,000 को पार कर गई है। जैसे-जैसे आबादी बढ़ी वैसे-वैसे कंक्रीट की इमारतों और गाड़ियों का बोझ बढ़ता चला गया। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार यहां 'ड्रेनेज सिस्टम' नहीं बना हुआ है। मकानों, होटलों का जो पानी बहता है वह पहाड़ को काटता हुआ गंगा में गिरता है। ड्रेनेज सिस्टम को अपनाने की बात पूर्व में मिश्रा आयोग भी कह चुकी है।

जोशीमठ की इस दशा के लिए सिर्फ सरकारें और नौकरशाही ही जिम्मेदार नहीं है, इसकी ओर आम लोगों को भी ध्यान देने की जरूरत है। विशेषज्ञों की माने तो इसे केवल एक गांव ही रहने दिया जाना चाहिए था लेकिन शहरीकरण और व्यापार के कारण इस इलाके पर इमारतों और जनसंख्या का बोझ बढ़ता ही चला गया जिसका परिणाम आज हम भुगत रहे हैं। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार जोशीमठ के नीचे अलकनन्दा नदी बह रही है जो लगातार पहाड़ की स्लोप की जड़ को काट रही है। खैर जो भी कारण हो, क्या अब जोशीमठ को बचाया जा सकता है? भू-वैज्ञानिकों के अनुसार अब साईंस का कोई रोल नहीं रह गया है, जो हो चुका है उसे ठीक नहीं किया जा सकता, अब केवल वहां के लोगों के जीवन को बचाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि केदारनाथ जैसी त्रासदी जोशीमठ में कभी भी घट सकती है। स्वर्ग का द्वार कहां जाने वाले जोशीमठ का अस्तित्व खत्म होना तय है।

# आने वाली पीढ़ी की चिंता



सुश्री दीप्ती दीक्षित

क्या होगा हमारी आने वाली पीढ़ी का, कैसे रह पाएगी हमारी पीढ़ी,  
यह सोचकर ही मन घबराता है।

क्या खाएंगे ये बच्चे, कितना शुद्ध होगा उनके लिए भोजन,  
मिलावट को देखकर ही मन घबराता है।

कैसे श्वास ले पाएंगे ये बच्चे, कैसे सह पाएंगे उनके फेफड़े,  
फैले प्रदूषण को देखकर ही मन घबराता है।

कैसे पीएंगे शुद्ध पानी, कहां से आएगा शुद्ध पानी,  
हो रही पानी की कमी को देखकर ही मन घबराता है।

कहां नौकरी मिलेगी, कैसी मिलेगी उनको नौकरी,  
फैली बेरोजगारी को देखकर ही मन घबराता है।

कैसे जीवनयापन करेंगे, कैसे अपने घर को चलाएंगे,  
बढ़ती मंहगाई को देखकर ही मन घबराता है।

कहां से आ रहे हैं नए-नए वायरस, कैसे जी पाएंगे उनके साथ,  
फैले कोरोना वायरस को देखकर ही मन घबराता है।

क्यों हो रहे हैं 4जी, 5जी नेटवर्क पर दिन-प्रतिदिन शोध,  
हो रही पक्षियों की कमी को देखकर ही मन घबराता है।

क्यों बढ़ाई जा रही है इंटरनेट की दिन-प्रतिदिन स्पीड और,  
दिन-भर फोन में लगे लोगों को देखकर ही मन घबराता है।

क्यों बनाई जा रही हैं ये ऊंची-ऊंची इमारतें दिन-प्रतिदिन,  
तुर्की में आए भूकम्प को देखकर ही मन घबराता है।

क्यों पहाड़ों को काट-काटकर उन पर बनाए जा रहे हैं रास्ते,  
जोशीमठ की स्थिति को देखकर ही मन घबराता है।

क्यों नहीं किया जा रहा हमारी युवा पीढ़ी को शिक्षित,

बढ़ रहे प्रतिदिन बलात्कार के मामलों को देखकर ही मन घबराता है।  
क्यों हो रही है दूर हमारी युवा पीढ़ी अपने देश की संस्कृति से,  
मनाए जा रहे रोज़ डे और वेलेंटाइन डे को देखकर ही मन घबराता है।  
क्यों हो रही है हमारी प्रकृति हमारे कार्यों से नाराज,  
पिघल रहे ग्लेशियर को देखकर ही मन घबराता है।



## जिंदगी से कुछ बात करते हैं.....



श्री शेखर कौशिक

ए जिंदगी, आ जरा बैठ तो, कुछ बात करते हैं ....  
 जो चल रहा या जो बीत गया, आ जरा उसे याद करते हैं ।  
 ये कायनात तुम में सिमटी है, या तुम कायनात का हिस्सा हो,  
 जो कभी ना पूरा हो सके ऐसा  
 कोई किस्सा हो,  
 जीवन की सुखद गाथा हो या लोमहर्षक कहानी हो,  
 या किसी चातक के लिए, स्वाति नक्षत्र बूँद का पानी हो,  
 आ, इन कहानियों में से कुछ एक किस्से याद करते हैं,  
 ए जिंदगी, आ जरा बैठ तो, कुछ बात करते हैं .....

कभी सुख हो, कभी विशुद्ध दुःख हो,  
 कभी अंतरंग हो, कभी पूर्ण विमुख हो,  
 कभी रंगीन लगती हो, कभी हसीन लगती हो,  
 कभी बदरंग होके भी न जाने कितने रंग रखती हो,  
 किसी खाली पड़े कैनवास में, चल कुछ रंग भरते हैं ,  
 ए जिंदगी, आ जरा बैठ तो, कुछ बात करते हैं....

तुम खुश क्यों नहीं रहती, तुम्हें इतनी शिकायत क्यों है,  
 तुम तो बेहतरीन अनुभव हो, फिर भी सबसे अदावत क्यों है,  
 कभी इठलाती हो तो कभी कटाक्ष के तीर चलाती हो,  
 कभी मुझ पर ही मुस्कुराकर, मेरी कायरता याद दिलाती हो ,  
 तू बैठ मेरे पास अपने मसलें भूलकर, अपनों की कुछ फिक्र करते हैं,  
 ए जिंदगी, आ जरा बैठ तो, कुछ बात करते हैं ....।

# संभालो जीवन को



सुश्री किरण मोंगा

क्यों बिखरते जा रहें हैं, क्यों परखते जा रहें हैं।  
 क्यों अपनों से दूर और केवल, स्वयं के होते जा रहे हैं।।  
 भर गई है रिश्तों में कड़वाहट, झूठी लगने लगी हर भावना है  
 स्वयं को उत्कृष्ट दिखाने में, सब नाते टूटते जा रहे हैं।।  
 सभी को चाहिए अपने लिए सब- यश, माया और समृद्धि  
 खून के रिश्ते भी हो गए पराए, और कितने स्वार्थी बनते जा रहे हैं।।  
 टूटता जा रहा एकता का बंधन, अराजकता चारों ओर है।  
 स्वयं को बचाने के लोभ में, साये को भी दूर भगाते जा रहे हैं।।  
 डर लगता है देखकर, प्रतिस्पर्धा की इस आपा-धापी को  
 बढ़ रहे हैं आगे को, लेकिन संस्कारों को पीछे छोड़े आ रहे हैं।।  
 जरा संभालो स्वयं को और देखो जिन्दगी के प्यारे रंगों को  
 समेट लो इन क्षणभंगुरों को, जो हम यूँही धूमिल किए जा रहे हैं।।  
 बांध लो प्यारे पलों को, अपनाओ मित्रों और परिवारों को।  
 अनुभूति लो उन खुशबुओं की, जिन्हें होड़ में रौंदे जा रहे हैं।।  
 सफलता तो अवश्य मिलेगी, अगर परिश्रम में लग्न है।  
 बस दूर रखो द्वेष के कीड़ों को, जो अनमोल पलों को खायें जा रहें हैं।।

## ठिकाना श्री गोविंद देव जी मंदिर, राजस्थान, जयपुर



सुश्री रूचि

राजस्थान के जयपुर में सिटी पैलेस परिसर में स्थित श्री गोविंद देव जी मंदिर राजस्थान में उच्च धार्मिक मूल्य के साथ जयपुर का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। मंदिर भगवान गोविंद देव जी को समर्पित है, जो पृथ्वी पर भगवान कृष्ण के अवतारों में से एक हैं। गोविंद देव जी की प्रतिमा वृन्दावन से स्थानांतरित कर जयपुर में स्थापित की गयी थी, इसलिए चैतन्य महाप्रभु की परम्परा के संत जयपुर को दूसरा वृन्दावन भी मानते हैं। गोविंद जी मंदिर में भक्तों की दैनिक संख्या हजारों की संख्या में होती है और उत्सव के दौरान लाखों तक पहुंच जाती है।

### गोविंद देव जी मंदिर का इतिहास

भगवान कृष्ण के रूपों में से एक भगवान गोविंद देव जी, आमेर के कछवाहा राजवंश के मुख्य देवता हैं और जयपुर और उसके शासकों के समृद्ध इतिहास से जुड़े हैं। ऐसा कहा जाता है कि मूल गोविंद देव जी की मूर्ति वृन्दावन के एक मंदिर में थी, जिसकी खुदाई लगभग 450 साल पहले वृन्दावन के गोमा टीला से श्री चैतन्य महाप्रभु के एक शिष्य श्रील रूप गोस्वामी ने की थी। स्थानीय इतिहासकारों का मानना है कि भगवान गोविंद देव अर्थात् श्रीकृष्ण का यह मंदिर वृन्दावन के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। इस मंदिर के शिलालेख से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस भव्य देवालय को आमेर के राजा भगवान दास के पुत्र राजा मान सिंह ने सन् 1590 में बनवाया था। आक्रमण के बढ़ते खतरे के कारण राधानानी की पवित्र छवि को एक ब्राह्मण द्वारा उड़ीसा ले जाया गया था। वहां इसे लक्ष्मी ठकुरानी के रूप में पूजा जाता था। जब उड़ीसा में राधानगर के राजा को वृन्दावन में भगवान गोविंद देवजी के प्रकट होने के बारे में पता चला तो उन्होंने पवित्र छवि को वृन्दावन भेज दिया। शक्ति स्वरूप राधा रानी की दिव्य छवि को 1690 ई. में भगवान गोविंद देवजी के बाईं ओर रखा गया था। रूप गोस्वामी एवं सनातन गोस्वामी नामक दो वैष्णव गुरुओं की देखरेख में मंदिर के निर्माण होने का उल्लेख भी मिलता है। मंदिर निर्माण का पूरा खर्च राजा मानसिंह द्वारा उठाया गया था। निर्माण के

समय मंदिर 7 मंजिला हुआ करता था और सबसे ऊपरी मंजिला पर एक विशालकाय दीपक का निर्माण कराया गया था और इस दीपक में प्रतिदिन बाती की लौ को जलाए रखने के लिए 50 किलोग्राम से अधिक देसी घी का उपयोग होता था। यही कारण था मंदिर कई किलोमीटर (किमी) दूर से ही दिखाई देता था। मंदिर की भव्यता का अनुमान इस उद्घरण से लगाया जा सकता है कि औरंगजेब ने शाम को टहलते हुए दक्षिण पूर्व में दूर से दिखने वाली रोशनी के बारे में जब पूछा तो पता चला कि यह चमक वृन्दावन के वैभवशाली मंदिर की है। मंदिर के इस दीपक की लौ को देखकर तत्कालीन मुगल आक्रांता औरंगजेब के मन में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो गया और इस भव्य मंदिर की सुंदरता उसे खटकने लगी। इसी ईर्ष्या और मंदिरों के प्रति अपनी घृणा के चलते उसने अंततः एक दिन अपनी सेना को इस गोविंद देव मंदिर को तोड़ने का आदेश दे दिया। किसी दैवीय कृपा के कारण मंदिर के पुजारी को औरंगजेब की इस योजना का भान हो गया और उन्होंने मंदिर में स्थापित भगवान गोविंद की पुरातन प्रतिमा को

वृंदावन से बहुत दूर, जयपुर भेज दिया, जहाँ उनकी स्थापना कनक बाग में स्थित गोविंद देव मंदिर में हुई। श्री शिव राम गोस्वामी ने पवित्र प्रतिमाओं को बैलगाड़ियों द्वारा पहले काम (भरतपुर), राधाकुंड और फिर गोविंदपुरा गांव (सांगानेर) में स्थानांतरित किया। तब आमेर शासकों ने पवित्र छवियों को स्थानांतरित करने के लिए सुरक्षा प्रदान की।

चूंकि भगवान गोविंद देव जी शासक वंश के प्रमुख देवता थे, इसलिए आमेर के तत्कालीन शासक, महाराजा सवाई जय सिंह ने मूर्ति को सुरक्षा प्रदान करने का जिम्मा लिया और 1735 ईस्वी में सूर्य महल में महाराजा सवाई जय सिंह द्वारा स्थापित किया गया था, जब उन्हें ऐसा करने के लिए स्वयं भगवान से अपने सपने में निर्देश प्राप्त हुआ था। 1714 में आमेर घाटी के कनक वृंदावन में दिव्य प्रतिमाएं पहुंचीं और अंत में, 1715 में उन्हें आमेर में जय निवास ले जाया गया।

स्थानीय मान्यता के अनुसार सवाई जय सिंह पहले सूरज महल में रहते थे। एक दिव्य दिन उन्होंने सपना देखा कि उन्हें महल खाली कर देना चाहिए क्योंकि यह स्वयं श्री गोविंद देवजी के लिए था। फिर वे वह जगह छोड़ कर चंद्र महल चले गए और इस प्रकार, भगवान गोविंद देव जी को सूरज महल में विराजमान किया गया। जयपुर राज्य के शासक गोविंद देवजी को जयपुर का सच्चा शासक और अपना राजा मानते थे। सवाई जय सिंह द्वितीय भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। उन्होंने **श्री गोविंद देवजी जी चरण, सवाई जय सिंह शरण** अंकित किया जिसका अर्थ है कि जय सिंह भगवान गोविंद देवजी के चरणों में भक्त हैं। महाराजा प्रताप सिंह जी ने भगवान कृष्ण के मुकुट के आकार में हवामहल बनवाया और भक्ति की कविताएं लिखीं। आजादी के बाद जब जयपुर राज्य को राजस्थान में मिला लिया गया था, तब जयपुर के शासकों ने कहा था कि राज्य भगवान गोविंद देवजी का है और यह गोविंद देवजी का ही रहेगा। हम उनके आशीर्वाद से सेवा करते रहेंगे। गोविंददेव जी के जयपुर आने पर राधा माधव गौड़ीय परम्परा में राधा दामोदर और गोपीनाथजी आदि के मंदिर बने जिनमें गोविंद भक्ति की रसधारा बहने लगी।

### **गोविंद देव जी मंदिर की वास्तुकला**

गोविंद जी का मंदिर बलुआ पत्थर और संगमरमर से बना है जिसकी छत सोने से ढकी है। मंदिर की इमारत की वास्तुकला में राजस्थानी, मुस्लिम और साथ ही शास्त्रीय भारतीय तत्वों का मिश्रण है। चूंकि यह एक शाही निवास के बगल में बनाया गया था, इसलिए दीवारों को झूमरों के साथ-साथ चित्रों से सजाया गया है। मंदिर भी एक हरे भरे बगीचे से घिरा हुआ है और बगीचे को 'तालकतौरा' नाम से जाना जाता है।

गोविंद जी मंदिर का सत्संग हॉल धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक अलग हॉल है। एक अलग हॉल की अवधारणा की कल्पना स्वर्गीय श्री प्रद्युमन कुमार गोस्वामी जी ने की थी और इसे उनके पुत्र श्री अंजन कुमार गोस्वामी और उनके पोते, श्री मानस कुमार गोस्वामी जी ने पूरा किया था। वस्तुतः जयपुर के गोविंद जी मंदिर के सत्संग हॉल ने विश्व का सबसे चौड़ा सिंगल स्पैन आर.सी.सी प्लैट छत निर्माण होने के कारण गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना स्थान पाया।

**मंदिर का समय:** मंदिर भक्तों के लिए ग्रीष्मकाल में सुबह 04.30 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक और शाम 5.00 बजे से रात्रि 08.45 बजे तक खुला रहता है। **सर्दियों के दौरान आरती का समय** सुबह की आरती के लिए आधे घंटे आगे बढ़ाया जाता है और शाम की आरती को आधे घंटे पीछे की ओर किया जाता है। मंदिर में जाने के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। चूंकि गोविंद जी मंदिर सिटी पैलेस परिसर के अंदर स्थित है, यहां शहर के सभी हिस्सों से सभी साधनों और परिवहन के साधनों से बहुत आसानी से पहुँचा जा सकता

है। गोविंद जी मंदिर पहुंचने के लिए निकटतम बस स्टेशन सिंधी कैम्प बस स्टॉप है। गोविंद जी मंदिर पहुंचने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन जयपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन है। गोविंद जी की मूर्ति को प्रत्येक आरती के साथ-साथ 'राजभोग' के दौरान जुलूस के लिए निकाला जाता है। चांदी के बर्तन में देवता को भोग या भोजन चढ़ाया जाता है। राजभोग में मिठाइयों की भरमार होती है। प्रत्येक आरती के दौरान राधा और कृष्ण दोनों की मूर्तियों को अलग-अलग वेशभूषा में तैयार किया जाता है। मंदिर का पवित्र प्रसाद विनम्र लड्डू है और आगंतुक मंदिर परिसर से ही प्रसाद खरीद सकते हैं। जो दर्शक यहाँ एक बार भी दर्शन के लिए आता है, उसकी प्रीति हमेशा के लिए गोविंददेव जी में लग जाती है।

## स्वामी विवेकानंद व तत्त्वज्ञान की उनकी मीमांसा [कर्मयोग]



श्री अमित कुमार हड़ोदिया

जब भी स्वामी विवेकानंद की बात होती है तो अमेरिका के शिकागो की धर्म संसद में साल 1893 में दिए गए उनके भाषण को जरूर याद किया जाता है। 125 साल पहले स्वामी विवेकानंद ने अपने भाषण की शुरुआत 'मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों' कहकर की थी, जिसके बाद सभागार में कई मिनटों तक तालियों की गूंज हर तरफ गूंजती रही। स्वामी विवेकानंद के उस भाषण की खास बातें:

- अमेरिका के बहनों और भाइयों, आपके इस स्नेहपूर्ण और जोरदार स्वागत से मेरा हृदय अपार हर्ष से भर गया है और मैं आपको दुनिया की प्राचीनतम संत परम्परा की तरफ से धन्यवाद देता हूँ। मैं आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूँ और सभी जातियों, संप्रदायों के लाखों, करोड़ों हिन्दुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

- मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्ताओं को भी है, जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ, जिसने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते, बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने हमारी इस जातीय एवं राष्ट्रीय दुर्बलता को पहचाना और समस्त देशवासियों को इसका सम्यक बोध कराया। हमने सहिष्णुता को केवल खोखले नारों तक सीमित नहीं रखा बल्कि उससे आगे सह-अस्तित्ववादिता पर आधारित जीवन-पद्धति विकसित की। यहूदी-पारसी से लेकर संसार भर की पीड़ित-पराजित-बहिष्कृत जातियों को भी हमने बड़े सम्मान एवं सद्भाव से गले लगाया। सृष्टि के अणु-रेणु में एक ही परम सत्य को देखने की दिव्य दृष्टि हमने सहस्राब्दियों पूर्व विकसित कर ली थी और इस नाम रूपात्मक जगत के भीतर समाविष्ट ऐक्य को पहचान लिया था।

स्वामी विवेकानंद के शिकागो-भाषण के संबोधन से जुड़े प्रसिद्ध प्रसंग- 'मेरे प्यारे अमेरिकावासी बंधुओं एवं भगनियों' के पीछे यही ऐक्य की भारतीय भावना और जीवन-दृष्टि थी। और सर्वाधिक उल्लेखनीय तो यह है कि हमारे इस सांस्कृतिक गौरवबोध में भी दुनिया की सभी संस्कृतियों व धार्मिक मान्यताओं के प्रति स्वीकार व सम्मान का भाव है, न कि उपेक्षा, हीनता या तिरस्कार का। स्वामी विवेकानंद ने वेदांत को न केवल ऊँचाई दी बल्कि उसे जनसाधारण को समझ आने वाली भाषा में समझाया भी। तत्त्वज्ञान की उनकी मीमांसा- कर्मयोग,

ज्ञानयोग, भक्तियोग, राजयोग आदि में क्या विद्वान, क्या साधारण - सभी समान रूप से रुचि लेते हैं! युवाओं में वे यदि सर्वाधिक लोकप्रिय थे और हैं तो यह भी समय की धड़कनों को सुन सकने की उनकी असाधारण समझ और अपार सामर्थ्य का ही सुपरिणाम था। उनकी जयंती युवा-दिवस के रूप में मनाया जाना सर्वथा उपयुक्त ही है। किसी एक क्षण की कौंध

किसी के जीवन में कैसा युगांतकारी बदलाव ला सकती है, यह स्वामी जी के जीवन से सीखा-समझा जा सकता है। परमहंस रामकृष्ण के साक्षात्कार ने उनके जीवन की दिशा बदलकर रख दी। कहते हैं कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। पर स्वामी विवेकानंद ने अकेले अपने दम पर पूरी दुनिया में रामकृष्ण मिशन और उसके सेवा-कार्यों की वैश्विक शृंखला खड़ी कर दी। वे कहा करते थे कि उन्हें यदि 1000 तेजस्वी युवा मिल जाँएँ तो वे देश की तस्वीर और तक्रदीर दोनों बदल सकते हैं। युवा स्वप्न और तदनुकूल संकल्पों के पर्याय थे स्वामी विवेकानंद। उनका जीवन भौतिकता पर आध्यात्म और भोग पर त्याग एवं वैराग्य की विजय का प्रतीक है। पर त्याग, भक्ति एवं वैराग्य की आध्यात्मिक भावभूमि पर खड़े होकर भी वे युगीन यथार्थ से अनभिज्ञ नहीं हैं। वे युग के सरोकारों और संवेदनाओं को भली-भाँति समझते हैं। अन्यथा वे दीनों-दुःखियों की निःस्वार्थ सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म नहीं घोषित करते। युवाओं के लिए गीता-पाठ से अधिक उपयोगी रोज फुटबॉल खेलने और वर्जिश करने को नहीं बताते। दरिद्रनारायण की सेवा में मोक्ष के द्वार न ढूँढते, और परिश्रम, पुरुषार्थ, परोपकार को सबसे बड़ा कर्तव्य नहीं बताते। हिंदुत्व की अवधारणा के वास्तविक और आधुनिक जनक स्वामी विवेकानंद ही हैं।

योग के अलग-अलग सन्दर्भों में अलग-अलग अर्थ हैं - आध्यात्मिक पद्धति, आध्यात्मिक प्रक्रिया। ऐतिहासिक रूप में, कर्म योग की अन्तिम अवस्था समाधि' को ही 'राजयोग' कहते थे।

स्वामी विवेकानंद कृत पुस्तक राजयोग में योग विद्या को लेकर उनके मत की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। उनकी यह किताब योग-शास्त्र के आधुनिक ग्रंथों में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वे महर्षि पतंजलि के योग-सूत्र नामक ग्रंथ को इस विद्या का आधारभूत ग्रंथ मानते थे। राजयोग की भूमिका में वे लिखते हैं, "पातंजल-सूत्र राजयोग का शास्त्र है और उस पर सर्वोच्च प्रामाणिक ग्रन्थ है। अन्यान्य दार्शनिकों का किसी-किसी दार्शनिक विषय में पतंजलि से मतभेद होने पर भी, वे सभी, निश्चित रूप से, उनकी साधना-प्रणाली का अनुमोदन करते हैं।"

स्वामी जी का मानना है कि अष्टांग योग एक प्रणाली है, जिसके अभ्यास से निश्चित फल अपने आप प्राप्त होता है। इसके लिए किसी तरह के बाह्यविश्वास की आवश्यकता नहीं है। इस विषय में वे कहते हैं, "अब तक हमने देखा, इस राजयोग की साधना में किसी प्रकार के विश्वास की आवश्यकता नहीं। जब तक कोई बात स्वयं प्रत्यक्ष न कर सको, तब तक उस पर विश्वास न करो-राजयोग यही शिक्षा देता है। सत्य को प्रतिष्ठित करने के लिए अन्य किसी सहायता की आवश्यकता नहीं।"<sup>[3]</sup> स्वामी विवेकानंद का मत है कि योग का अनुशीलन भी ज्ञान की भाँति व्यवस्थित तरीके से होना चाहिए और इसमें तर्कशीलता का अवलम्बन करना चाहिए। इस विषय पर वे एक व्याख्यान में प्रकाश डालते हुए कहते हैं, "रहस्य-स्पृहा मानव-मस्तिष्क

को दुर्बल कर देती है। इसके कारण ही आज योगशास्त्र नष्ट-सा हो गया है। किन्तु वास्तव में यह एक महाज्ञान है। चार हजार वर्ष से भी पहले यह आविष्कृत हुआ था। तब से भारतवर्ष में यह प्रणालीबद्ध होकर वर्णित और प्रचारित होता रहा है।"

विवेकानंद के मतानुसार समाधि ही अष्टांग योग का फल है, जो मानव-जीवन का लक्ष्य है। वे कहते हैं, "इस समाधि में प्रत्येक मनुष्य का, यही नहीं, प्रत्येक प्राणी का अधिकार है। इसे निम्नतर प्राणी से लेकर अत्यंत उन्नत देवता तक सभी, कभी-न-कभी, इस अवस्था को अवश्य प्राप्त करेंगे, और जब किसी को यह अवस्था प्राप्त हो जायगी, तभी हम कहेंगे कि उसने यथार्थ धर्म की प्राप्ति की है।"

**भक्तियोग** भावनाप्रधान और प्रेमी प्रकृति वाले व्यक्ति के लिए उपयोगी है। वह ईश्वर से प्रेम करना चाहता है और सभी प्रकार के क्रिया-अनुष्ठान, पुष्प, गन्ध-द्रव्य, सुन्दर मन्दिर और मूर्ति आदि का आश्रय लेता और उपयोग करता है। प्रेम एक आधारभूत एवं सार्वभौम संवेग है। यदि कोई व्यक्ति मृत्यु से डरता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसे अपने जीवन से प्रेम है। यदि कोई व्यक्ति अधिक स्वार्थी है तो इसका तात्पर्य यह है कि उसे स्वार्थ से प्रेम है। किसी व्यक्ति को अपनी पत्नी या पुत्र आदि से विशेष प्रेम हो सकता है। इस प्रकार के प्रेम से भय, घृणा अथवा शोक उत्पन्न होता है। यदि यही प्रेम परमात्मा से हो जाय तो वह मुक्तिदाता बन जाता है। ज्यों-ज्यों ईश्वर से लगाव बढ़ता है, नश्वर सांसारिक वस्तुओं से लगाव कम होने लगता है। जब तक मनुष्य स्वार्थयुक्त उद्देश्य लेकर ईश्वर का ध्यान करता है तब तक वह भक्तियोग की परिधि में नहीं आता। पराभक्ति ही भक्तियोग के अन्तर्गत आती है जिसमें मुक्ति को छोड़कर अन्य कोई अभिलाषा नहीं होती। भक्तियोग शिक्षा देता है कि ईश्वर से, शुभ से प्रेम इसलिए करना चाहिए कि ऐसा करना अच्छी बात है, न कि स्वर्ग पाने के लिए अथवा सन्तति, सम्पत्ति या अन्य किसी कामना की पूर्ति के लिए। वह यह सिखाता है कि प्रेम का सबसे बढ़ कर पुरस्कार प्रेम ही है और स्वयं ईश्वर प्रेम स्वरूप है।

भक्तियोग भी आत्मसंयम, अहिंसा, ईमानदारी, निश्छलता आदि गुणों की अपेक्षा भक्त से करता है क्योंकि चित्त की निर्मलता के बिना निःस्वार्थ प्रेम सम्भव ही नहीं है। प्रारम्भिक भक्ति के लिए ईश्वर के किसी स्वरूप की कल्पित प्रतिमा या मूर्ति (जैसे दुर्गा की मूर्ति, शिव की मूर्ति, राम की मूर्ति, कृष्ण की मूर्ति, गणेश की मूर्ति आदि) को श्रद्धा का आधार बनाया जाता है। किन्तु साधारण स्तर के लोगों को ही इसकी आवश्यकता पड़ती है।

**ज्ञान योग** ज्ञान और स्व की जानकारी प्राप्त करने को कहते हैं। ये अपनी और अपने परिवेश को अनुभव करने के माध्यम से समझना है। स्वामी विवेकानन्द के ज्ञानयोग सम्बन्धित व्याख्यान, उपदेशों तथा लेखों को लिपिबद्ध कर 'ज्ञानयोग' पुस्तक में संकलित किया है। ज्ञान के माध्यम से ईश्वरीय स्वरूप का ज्ञान, वास्तविक सत्य का ज्ञान ही ज्ञानयोग का लक्ष्य है। स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित ज्ञानयोग वेदांत के अंतर्गत सत्यों को बताकर वेदांत के सार रूप में प्रस्तुत करता है।



एक रूप में ज्ञानयोगी व्यक्ति ज्ञान द्वारा ईश्वरप्राप्ति मार्ग में प्रेरित होता है। स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित ज्ञानयोग में मायावाद, मनुष्य का यथार्थ व प्रकृत स्वरूप, माया और मुक्ति, ब्रह्म और जगत, अंतर्जगत, बहिर्जगत, बहुतत्व में एकत्व, ब्रह्म दर्शन, आत्मा का मुक्त स्वभाव आदि नामों से उनके द्वारा दिये भाषणों का संकलन है।

अब यदि विश्लेषण किया जाये तो वास्तव में ज्ञान योगी मायावाद के असल तत्व को जानकर, अपनी वास्तविकता और वेदांत के अद्वैत मत के अनुरूप आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानकर मुक्ति प्राप्त करता है।

स्वामी विवेकानंद की प्रसिद्ध किताब **कर्म योग** उनके द्वारा अमेरिका में दिसम्बर 1895 से जनवरी 1896 के बीच दिए गए व्याखानों का संकलन है। स्वामी जी के अनुसार कर्मयोग वस्तुतः निःस्वार्थपरता और सत्कर्म द्वारा मुक्ति लाभ करने की एक विशिष्ट प्रणाली है। विवेकानन्द कहते हैं कि बिना किसी निजी स्वार्थ के लोकोपकार के लिए अपना कर्तव्य सर्वश्रेष्ठ तरीके से करना ही कर्म योग है। कर्म योग के आदर्श को प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं, "आदर्श पुरुष तो वे हैं, जो परम शान्ति एवं निस्तब्धता के बीच भी तीव्र कर्म का, तथा प्रबल कर्मशीलता के बीच भी मरुस्थल की शान्ति एवं निस्तब्धता का अनुभव करते हैं। उन्होंने संयम का रहस्य जान लिया है—अपने ऊपर विजय प्राप्त कर चुके हैं। किसी बड़े शहर की भरी हुई सड़कों के बीच से जाने पर भी उनका मन उसी प्रकार शान्त रहता है, मानों वे किसी निःशब्द गुफा में हों, और फिर भी उनका मन सारे समय कर्म में तीव्र रूप से लगा रहता है। यही कर्मयोग का आदर्श है, और यदि तुमने यह प्राप्त कर लिया है, तो तुम्हें वास्तव में कर्म का रहस्य ज्ञात हो गया।" [6] गीता में वर्णित अनासक्ति का सिद्धान्त कर्मयोग में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे समझाते हुए स्वामी जी कहते हैं, "अनासक्त होओ; कार्य होते रहने दो—मस्तिष्क के केन्द्र अपना अपना कार्य करते रहें—निरन्तर कार्य करते रहें, परन्तु एक लहर को भी अपने मन पर प्रभाव मत डालने दो। संसार में इस प्रकार कर्म करो, मानों तुम एक विदेशी पथिक हो, दो दिन के लिए यहाँ आये हो। कर्म तो निरन्तर करते रहो, परन्तु अपने को बन्धन में मत डालो; बन्धन बड़ा भयानक है। संसार हमारी निवासभूमि नहीं है; यह तो उन सोपानों में से एक है, जिनमें से होकर हम जा रहे हैं।"

कर्म योग का वास्तविक तात्पर्य समझाते हुए स्वामी विवेकानंद कहते हैं, "अब तुमने देखा, कर्मयोग का अर्थ क्या है। उसका अर्थ है मौत के मुँह में भी बिना तर्क-वितर्क के सब की सहायता करना। भले ही तुम लाखों बार ठगे जाओ, पर मुँह से एक बात तक न निकालो; और तुम जो कुछ भले कार्य कर रहे हो, उनके सम्बन्ध में सोचो तक नहीं। निर्धन के प्रति किये गये उपकार पर गर्व मत करो और न उससे कृतज्ञता की ही आशा रखो; बल्कि उलटे तुम्हीं उसके कृतज्ञ होओ—यह सोचकर कि उसने तुम्हें दान देने का एक अवसर दिया है।"

# समाज सेवा



सुश्री नीलम

समाज सेवा शब्द सुनने में जितना प्रिय और सरल लगता है करने में उतना ही कठिन एवं व्यापक है। समाज सेवा का अर्थ है समाज की सेवा अर्थात् समाज में रहने वाले प्राणियों की सेवा करना तथा समय पर उनकी सहायता करना। इसका प्रारम्भ हमें अपने परिवार से ही करनी चाहिए जैसे अत्यन्त ही आवश्यक सदस्य जो परिवार में बड़े-बूढ़े उनकी सेवा निस्वार्थ रूप से करनी चाहिए।

सेवा किसी मनुष्य, पशु-पक्षी, वृक्ष आदि किसी की भी हो सकती है। समाज सेवा स्त्री-पुरुष, बच्चे बूढ़े सभी किसी भी आयु में कर सकते हैं लेकिन इस कार्य के लिए व्यक्ति के मन में लगन, इच्छा शक्ति तथा निःस्वार्थ भावना का होना आवश्यक हैं। ऐसी इच्छा और भावना वाले मनुष्य समय न रहते हुए भी समाज कार्य के लिए थोड़ा बहुत समय निकाल ही लेते हैं।

हम सभी मनुष्य अपने जीवन में समाज से बहुत कुछ लेते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन निर्वाह के लिए उसे समाज के विभिन्न वर्गों का सहयोग लेना ही पड़ता है। अतः हमें भी सोचना है कि जो कुछ हमने समाज से लिया उसके लिए यदि हम थोड़ा भी करें तो यह हमारा कर्तव्य होगा। विशेष रूप से तब, जब भगवान ने हमें स्वस्थ काया (शरीर) के साथ पृथ्वी पर भेजा है हमें इस योग्य बनाया है और बहुत से अनुभवों का सग्रह दिया है।

लोककल्याण की भावना से अकेले या संगठित होकर किसी न किसी प्रकार से समाज सेवा की कार्यों में जुड़ जाना चाहिए, अपनी इच्छा एवं योग्यता के आधार पर कार्यों का चुनाव कर पूरे मन से काम करना चाहिए। इससे दूसरों की सहायता होगी और स्वयं को भी मानसिक संतोष प्राप्त होगा।

भारतीय ऋषि-मुनियों के जीवन का लक्ष्य था सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सतु निरामयाः अर्थात् "सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े। इसी जीवन की प्राप्ति के लिए उनहोंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया तथा विश्व को मानवता की शिक्षा दी। इसी श्लोक से प्रेरित होकर हम सबको भी समाज सेवा के लिए कार्यरत होना चाहिए।

समाज सेवा के अनेकों क्षेत्र हैं जैसे शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक सहायता और चिकित्सा आदि।

- 1) स्वास्थ्य के क्षेत्र में रोगियों की सेवा सुरक्षा, देखभाल से संबन्धित अनेकों कार्य किए जा सकते हैं।
- 2) मानसिक रूप से पीड़ितों की समस्याओं को समझना, उनका मनोबल बढ़ाना तथा उत्साहवर्धन कर उन्हें इतना शक्तिशाली बना देना की समाज उन्हें अपना लें।
- 3) पठन-पाठन की आर्थिक सहायता तथा जो स्वयं पढ़ाकर मदद करना।

- 4) जो समाज में आर्थिक रूप से सक्षम है उनको अपने बच्चों एवं परिवार के सदस्यों के जन्मदिन, विवाह की सालगिरह आदि दिवस पर किसी वृद्ध आश्रम, अनाथालय में जाकर बच्चों बूढ़ों में एक समय की भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए।
- 5) पीड़ितों का अकेलापन, निराशा आदि को दूर करने की सहायता करना। उनके साथ थोड़ा समय व्यतित करना ।

भारतीय संस्कृति में भूखे को भोजन, प्यासे को जल, रोगी की सेवा तथा उनकी चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता को यज्ञ के रूप में माना जाता है। समाज के लोग सुंदर, स्वस्थ एवं उल्लासित जीवन व्यतीत कर सकें इसके लिए समाज के हित का कोई कार्य अपनी इच्छाशक्ति के अनुसार अवश्य करना चाहिए ताकि इस मनुष्य जीवन को सार्थक बनाया जा सकें।

## “परम” बाँसभक्त कर्मचारी



श्री शेखर कौशिक

एक कर्मचारी कम्पनी के सभी कामों से बचता था लेकिन बाँस को मक्खन लगाने में बड़ा माहिर था.....।

वह बाँस के आदेश के अनुसार सभी काम करता था। ऑफिशियल काम को छोड़ कर वह बाँस के सभी निजी काम जैसे उनके बेटे की कॉलेज फीस जमा करना, बेटी की डांस कॉस्ट्यूम खरीदना, उनकी कार की सर्विसिंग कराना, उनके बेटे का प्रोजेक्ट पूरा करना, यानी लगभग सब कुछ करता था इसलिए जाहिर था कि, वह बाँस का पसंदीदा था उसे सभी प्रोत्साहन और इन्क्रीमेंट समय से मिलता था और दूसरी तरफ बाकी कर्मचारी, ऑफिशियल काम पूरा करने पर भी बाँस की डाँट खाते रहते थे।

एक दिन अचानक बाँस की मां के निधन की खबर मिली। सारे कर्मचारी बहुत उदास चेहरे के साथ उनके घर भागे जैसे उनकी ही माँ का देहांत हो गया हो, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि ऐसे वक्त में वह बन्दा बाँस के घर के आस पास भी नहीं देखा गया, जिसके बारे में हर कोई कयास लगा रहा था....कि वह अनुपस्थित कैसे ?

अब अन्य कर्मचारियों ने माल्यार्पण से सुसज्जित वाहन की व्यवस्था की और बाँस की मां को श्मशान ले जाया गया...

लेकिन जैसे ही सभी लोग शवदाह गृह पहुंचे तो पहले से ही 16 शव बिजली से जलने के लिए कतार में थे। प्रत्येक शरीर को जलने में लगभग 1 घन्टा लग रहा था..... यानि

कुल मिलाकर सूर्यास्त से पहले दाह संस्कार संभव नहीं था। बाँस का चेहरा लाल हो रखा था और बाकी सब भी परेशान थे।

अचानक कतार में पड़े 16 शव में से दूसरा शव उठ बैठा.....

उपस्थित सब लोग मारे डर के भाग खड़े हुए.....

बाद में पूर्ण आश्चर्य के साथ पता चला कि यह कोई शव नहीं था बल्कि वही “परम” बाँसभक्त कर्मचारी था।

उसने तुरंत बाँस को बताया ...

“श्रीमान, माफ़ी चाहूँगा सुबह से आपके घर नहीं आ पाया था क्योंकि जैसे ही आपकी माता जी के देहांत का समाचार सुना और देखा कि सब आपके घर की तरफ भाग रहे हैं तो ख्याल आया कि पहले यहां का भी इंतजाम देख लूँ और देखा तो पाया कि जब आप बाँडी लेकर आयेंगे तो शाम तक मुश्किल से

नंबर आ पायेगा । आज तो बस आपके खातिर सुबह से ही आपकी माता जी का नंबर लगा दिया सर सुबह 8 बजे से ही लाश बनकर लेटा हुआ हूं यहाँ.. वहाँ उपस्थित सभी लोग उसकी प्रतिबद्धता के स्तर को देखकर दंग रह गए। और बॉस कभी उसको बड़े प्यार से देखते और कभी बाक़ी कर्मचारियों को खा जाने वालीं निगाहों से.....!!

## दिल्ली में प्रदूषण की समस्या: एक अवलोकन एवं समाधान



सुश्री संजना सोनी

दिल्ली जैसे बड़े शहरों में प्रदूषित वायु एक बड़ी समस्या है। दिल्ली के पर्यावरण वायु प्रदूषण की मुख्य वजहों में टैफिक जाम, इंडस्ट्रियल क्षेत्रों का विकास, औद्योगिक उपकरणों का उपयोग, और बढ़ती जनसंख्या शामिल हैं।

दिल्ली के वातावरण में विभिन्न कारणों से वायु प्रदूषण होता है। यहाँ कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. परिवहन उपयोग: दिल्ली में बहुत सारे वाहन होते हैं, जो कार ऑटो, बस, ट्रक, स्कूटर, मोटरसाइकिल आदि शामिल हैं। इन वाहनों के इंजन से निकलने वाली धुएं, नित्रिक ऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड और फाइन पार्टिकल मामले में सबसे बड़े प्रदूषण कारणों में से हैं।
2. औद्योगिक क्रियाकलाप: दिल्ली एक बड़ा औद्योगिक शहर है, जिसमें विभिन्न प्रकार के उद्योग स्थापित हैं। इन उद्योगों से भी वायु प्रदूषण होता है।
3. कृषि क्रियाकलापों से उत्पन्न धुएं: दिल्ली के आस-पास कृषि क्षेत्र हैं, जहाँ फसलों को जलाकर खेत साफ किए जाते हैं। इससे प्रदूषण होता है। किसान धान की फसल काटने के बाद उसके अवशेष को खेत में ही छोड़ देते हैं। इसे पराली कहते हैं। बाद में अगली फसल की बुवाई से पहले इसे खेत में ही जला दिया जाता है। इससे उत्पन्न धुआ भी दिल्ली में प्रदूषण की समस्या में सर्दियों में अहम भूमिका निभाती है।

दिल्ली में वायु प्रदूषण को कम करने के कुछ उपाय इस प्रकार हैं :-

1. वाहनों का उपयोग कम करें। जितना संभव हो सके, आप चलते-फिरते हो जाने वाले कार्यों के लिए वाहनों के उपयोग से बचें।
2. पौधे लगाएं। यदि आपके पास जगह है, तो आप पौधे लगाकर अपने आसपास के वातावरण को स्वस्थ बना सकते हैं।
3. अपने घर या कार्यालय परिसर में किसी भी प्रकार के कूड़े को जलाने से बचें।
4. बाइक और कार के उपयोग में बदलाव करें। यदि संभव हो तो आप सार्वजनिक परिवहन का उपयोग कर सकते हैं, जो आपके वाहन के उपयोग से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण से बचें जिससे शहर के प्रदूषण की कमी में योगदान होगा।
5. इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग को अपनाए।
6. कार पूलिंग के इस्तेमाल से भी इस समस्या को कम किया जा सकता है।

दिल्ली सरकार ने वायु प्रदूषण कम करने के लिए कई उपाय अपनाए हैं। कुछ मुख्य उपायों में शामिल हैं:

1. ऑड-ईवन प्रणाली (Odd-Even System): दिल्ली सरकार सर्दियों में ऑड-ईवन प्रणाली को लागू करती है जिसमें दिनों के आधार पर वाहनों को चलाने की अनुमति दी जाती है। इस प्रणाली के तहत, वाहनों की संख्या वायु प्रदूषण के स्तर को कम करने में मदद करती है।

2. प्रदूषण नियंत्रण उपकरण (Pollution Control Devices): दिल्ली सरकार ने सभी डीजल वाहनों के लिए प्रदूषण नियंत्रण उपकरण की अनिवार्यता लागू की है। इसके अलावा, इंजन और इसके अन्य पार्ट्स के स्वास्थ्य से जुड़े मापदंडों का भी पालन करना अनिवार्य है।
3. सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना: सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने के लिए, दिल्ली सरकार ने एक नई इलैक्ट्रिक बस सेवा शुरू की है जो वायु प्रदूषण कम करने में मदद कर सकती है। इसके अलावा, सरकार ने भी मेट्रो नेटवर्क को विस्तारित किया है।
4. इसके अलावा भविष्य में दिल्ली के अंडर स्मॉग टावर की भी स्थापना होनी है सरकार का लक्ष्य वर्ष 2024 तक दिल्ली में पंजीकृत कुल नए वाहनों में से 25% इलैक्ट्रिक वाहनों के लक्ष्य को प्राप्त करना है।
5. दिल्ली सरकार द्वारा इलैक्ट्रिक बसों के परिचालन को बढ़ावा देना।

पर्यावरण हमारी जीवनदायी स्रोतों में से एक है और हमें इसे संरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम पर्यावरण की देखभाल नहीं करते हैं, तो हमारी स्वास्थ्य और जीवनशैली पर बुरा असर पड़ सकता है। यदि हम सभी अपने स्तर पर कुछ छोटे छोटे कदम उठाएं, तो हम सभी मिलकर पर्यावरण की सुरक्षा कर सकते हैं।

# “ग्लोबल वार्मिंग”



श्री दीपक तोमर

“ग्लोबल वार्मिंग” मानवजनित एक पूरे विश्व की समस्या है। इस शब्द के विषय में हम अक्सर सुनते हैं परंतु आम जनमानस की समझ से यह अभी दूर है। यह समस्या असल में है क्या, इसको समझने से पहले हमें “हरित गृह प्रभाव (Green House Effect)” को समझना होगा। जब ठंडी जगहों में कुछ ऐसे पौधों को उगाना हो जो थोड़े गरम वातावरण में ही उगते हैं तो उनके ऊपर एक टेंटनुमा हरे काँच या पॉलिथीन का एक घर सा बना दिया जाता है। इसे हरित गृह (Green House ) कहते हैं। इससे यह होता है कि जब सूर्य की गर्मी इन घरों में प्रवेश करती है तो इसका कुछ हिस्सा पौधों को आवश्यक गर्मी प्रदान करता है और टेंटनुमा घर के अंदर एक उचित तापमान बनाए रखता है और बाकी का हिस्सा टेंट से बाहर विकिरित हो जाता है। इससे ग्रीन हाउस के अंदर एक उचित तापमान बना रहता है जिससे पौधे बाहर के ठंडे वातावरण में भी जीवित बने रहते हैं। यही हरित गृह प्रभाव (Green House Effect) होता है। अब ठीक यही प्रक्रिया हमारी धरती के लिए कार्य करती है। हमारी धरती के चारों तरफ हवा के एक घेरा है जिसे हम वायुमंडल कहते हैं। दिन के समय धरती पर गिरने वाली सूर्य की गर्मी धरती द्वारा सोख ली जाती है और रात के समय धरती वापिस उस सोखी गयी गर्मी को अन्तरिक्ष कि तरफ विकिरित कर देती है। अब वायुमंडल बिलकुल उस ग्रीन हाउस के काँच कि तरह व्यवहार करता है। वायुमंडल में मिलने वाली कुछ गैसें (जिन्हें ग्रीन हाउस गैसें भी कहा जाता है) एवं जलवाष्प इस धरती द्वारा विकिरित गर्मी के कुछ भाग को वातावरण में ही रोक लेती है और बाकी गर्मी को अन्तरिक्ष में विकिरित हो जाती है। यही वायुमंडल में रुकी गर्मी हमारी धरती को गरम रखती है जिससे धरती पर एक अनुकूल तापमान बना रहता है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि वायुमंडल एक कंबल कि तरह कार्य करता है जो धरती का तापमान मानव जीवन के रहने योग्य बनाए रखता है। अगर यह हरित गृह प्रभाव कार्य न करे तो रात में धरती का तापमान शून्य से भी नीचे चला जाएगा और धरती बेहद ही ठंडी हो जाएगी। परंतु हरित गृह प्रभाव के कारण ऐसे स्थिति उत्पन्न नहीं हो पाती। तो हम कह सकते हैं कि “ग्रीन हाउस प्रभाव” एक अच्छी चीज़ है। जी हाँ, ग्रीन हाउस प्रभाव अच्छी चीज़ है।

## तो समस्या कहाँ है?

19वीं सदी में विश्व में विज्ञान की तरक्की के कारण इंडस्ट्रियल क्रांति की शुरुआत हुई। प्राकृतिक संसाधनों का हद से ज्यादा दोहन शुरू हुआ। जीवाश्म ईंधन का प्रयोग बढ़ गया जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, जलवाष्प, क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFCs), नाइट्रस ऑक्साइड आदि गैसों की मात्रा समय के साथ साथ अब ज्यादा मात्रा में जमा होती गयी। अब चूंकि ये गैस वायुमंडल में ज्यादा मात्रा में जमा हो गयी है तो ये धरती द्वारा विकिरित गर्मी की ज्यादा मात्रा को अब वायुमंडल में रोकने लगी है। अब इससे धरती के औसत तापमान में वृद्धि होने लगी है। इस प्रक्रिया में सदियों का समय लगा है और ये अब भी निरंतर चल रही है। धरती के औसत तापमान में होने वाली यही वृद्धि “ग्लोबल वार्मिंग” कहलाती है तो कुल मिलाकर ये पूर्ण रूप से मानवजनित समस्या है। जैसे जैसे ये समस्या बढ़ेगी ऐसे ही



धरती के औसत तापमान में वृद्धि होती जाएगी। परिणामस्वरूप धरती के दोनों ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघलने लगेगी। इससे समुद्र में जल स्तर बढ़ेगा और तटवर्ती इलाके पानी में डूब जाएंगे। इसके अलावा और भी बहुत सारे नकारात्मक प्रभाव होंगे जो हम इन्सानों की नस्ल के लिए ही खतरा बन जाएंगे। अब समय आ गया है कि हम जीवाश्म ईंधन का विकल्प खोज लें वरना ये धरती हमारी आने वाली नस्लों के रहने लायक नहीं रह जाएगी।

# प्रौद्योगिकी क्या है?



श्री राहुल नोगिया

प्रौद्योगिकी (टेक्नॉलजी) से तात्पर्य है उपकरण, मशीन, तकनीक, शिल्प, प्रणाली और संगठन के तरीकों, निर्माण, संशोधन, उपयोग और ज्ञान से है, ताकि किसी समस्या को हल करने के लिए या किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक निश्चित इनपुट एवं वांछित आउटपुट के लिए विशिष्ट कार्य करने हेतु सुधार हो सके। यह ऐसे उपकरणों के संग्रह को भी संदर्भित कर सकता है जिसमें मशीनरी, संसाधन व्यवस्था और प्रक्रियाएं शामिल हैं।

प्रौद्योगिकी मानव के साथ-साथ अन्य प्राणियों की प्रजातियों को नियंत्रित करने और उनके प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल होने की क्षमता को काफी प्रभावित करती है प्रौद्योगिकी शब्द आमतौर पर विशिष्ट क्षेत्रों में लागू किया जाता है जैसे निर्माण प्रौद्योगिकी, चिकित्सा प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी आदि ।

प्रौद्योगिकी का उपयोग मानव प्रजातियों में प्राकृतिक संसाधनों को सरल उपकरणों में बदलने के साथ शुरू हुआ। उदहारणार्थ आग को नियंत्रित करने की क्षमता की खोज ने भोजन के उपलब्ध स्त्रोतों में वृद्धि की, ऐसे ही पहिये के आविष्कार ने मनुष्यों को उनके पर्यावरण में लंबी यात्रा करने और उसे नियंत्रित करने में मदद की।

प्रिंटिंग प्रेस, टेलीफोन और इंटरनेट सहित हाल के तकनीकी विकल्पों के विकास ने भौतिक बाधाओं को कम किया है और मनुष्यों को वैश्विक स्तर पर स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को साझा करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

हालांकि प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल हमेशा ही शांतिपूर्ण या सुखकारी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नहीं किया गया और न ही किया जाता है, कभी कभी विनाशकारी शक्तियों के हथियारों, परमाणु हथियारों आदि के विकास ने इतिहास में समय-समय पर कुछ विनाशकारी प्रगति में भी योगदान दिया है।

हम सभी ने अपने जीवन में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल अक्सर किसी न किसी रूप में अपने कार्य को सरल या सुगमता से करने के लिए करते ही रहते हैं। प्रौद्योगिकी का मतलब विज्ञान का एक तरह से उपयोग करना भी होता है जो किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है। प्रौद्योगिकी के अंदर किसी न किसी सर्विस या वस्तु के निर्माण के लिए तकनीकी कौशल, तरीके, प्रक्रिया आदि चीजों का समावेश होता है।

## वस्तु के रूप में प्रौद्योगिकी

आमतौर पर हम प्रौद्योगिकी को कुछ वस्तुओं के रूप में जानते हैं जैसे औजार, मशीन, बिजली से चलने वाले उपकरण, उपभोक्ता उत्पाद आदि, हम इनका वर्गीकरण एवं अध्ययन कर सकते हैं।

## प्रक्रिया के रूप में प्रौद्योगिकी

प्रौद्योगिकी का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है प्रक्रियाएं जिनके द्वारा वस्तुओं या मशीनों को बनाया और उनका उपयोग किया जाता है। इंजीनियर वस्तु के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि वैज्ञानिक उनके संचालन या उपयोग की संभावनाओं पर शोध करते हैं। किसी भी विकास के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग का गहरा संबंध होता है। मनुष्य का विकास चरण प्रौद्योगिकी की उन्नति के बिना संभव हो ही नहीं सकता। किसी भी देश की उन्नति एवं अर्थव्यवस्था वहाँ पर उन्नत की गई या इस्तेमाल की जाने वाली प्रौद्योगिकी से ही संबंधित होती है।

एक ओर प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को आसान बनाने के लिए एक लम्बा सफर तय किया है और मानव को कई जटिल कार्यों को सुगमता या कम समय में करने में सहायता की है। वहीं दूसरी ओर प्रौद्योगिकी के नकारात्मक पहलुओं को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। जैसे प्रदूषण में भारी वृद्धि जिसके चलते मनुष्यों में स्वास्थ्य मुद्दों का एक प्रमुख कारण बन गया है।

प्रौद्योगिकी ने समाज को जोड़ने के स्थान पर उन्हें बांटने का काम भी किया है। जिससे अमीर व गरीब वर्गों में खाई और अधिक बन गई है। तकनीकी ने मानव की कार्य क्षमता को भी प्रभावित किया है आजकल प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से मनुष्य आलस्य का शिकार हो चला है जिसके चलते गंभीर बीमारियों से ग्रसित होने का खतरा बढ़ा है ।

वैसे तो प्रौद्योगिकी हमारे लिए एक अच्छी चीज है लेकिन हर वस्तु विशेष के सकारात्मक के साथ – साथ कुछ नकारात्मक पहलू भी है जैसे :-

### प्रदूषण

नई तकनीक से औद्योगिकीकरण बढ़ता है जो हवा, पानी मिट्टी और ध्वनी प्रदूषण को जन्म देता है इसके अलावा ये मनुष्यों, जानवरों एवं पक्षियों में भी कई घातक सवास्थ्य संबंधी मुद्दों/बीमारियों का कारण बनता जा रहा है

### प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव

नई-नई तकनीकों को विकसित करने में प्रकृति के संसाधनों के अत्यधिक दोहन से प्राकृतिक संतुलन गड़बड़ा जाता है। जिसके चलते प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ता ही जा रहा है।

### बेरोजगारी

बेरोजगारी भी इसका एक परिणाम है। मशीन कई श्रमिकों के काम को करने में सक्षम होती है तथा वह बिना रुके कई घंटों एवं कई दिनों तक कार्य करने में सक्षम होती है जिसके कारण यह श्रमिकों के स्थान पर अच्छा विकल्प बन जाती है जिससे बेरोजगारी आदि के बढ़ने की प्रवृत्ति देखी गई है ।

वैश्विक पटल पर मानव और देश की उन्नति को ध्यान में रखते हुए प्रौद्योगिकी को अपने जीवन में इस्तेमाल और आत्मसार करने के अलावा कोई और दूसरा विकल्प उपलब्ध नहीं है परन्तु प्रौद्योगिकी को पर्यावरण के साथ समन्वय बनाकर इस्तेमाल करना भी हमारा कर्तव्य है जिससे हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक खलनायक की तरह नहीं बल्कि एक समन्वयक निर्माता के रूप में देखे जाए ।

# प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ



श्री राहुल नोगिया

पक्षी सभी चहचहाने लगे हैं  
मिलकर मधुर गीत गाने लगे हैं,  
तुम अपना स्वर इनके साथ मिलाओ  
प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ ।

भोर में चलती पावन हवाएं  
जीवन का संदेश सुनाएं,  
इनके आनंद में तुम भी नहाओ  
प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ ।

आकाश में आ गई सुर्ख लाली  
देखो खत्म हो गई रात ये काली,  
अपने तन-मन में नई ऊर्जा समाओ  
प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ ।

अज्ञान का मिट जाएगा अंधेरा  
विज्ञान का आएगा जीवन में सवेरा,  
अनमोल अवसर न सो कर गवाओ  
प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ ।

उत्तम विचारों से ही उत्थान होगा  
कर्म करने से ही कल्याण होगा,  
प्रकृति को अपना साथी बनाओ  
प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ ।

# तनाव मुक्त जीवन के सूत्र



श्री राहुल नोगिया

1. जीवन छोटा है। तनाव ग्रस्त रहकर इसे और छोटा ना बनायें।
2. बहुत अधिक महत्वाकांक्षी न बनें। इसमें कुण्ठित होने की संभावना अधिक रहती है।
3. आने वाली समस्याओं को देखने का दृष्टिकोण बदलें अर्थात् सकारात्मक परिणाम की आशा करें।
4. दूसरों से आशा मत करें, दूसरों की आशा भरसक पूरी करने का प्रयत्न करें, मन को शांति मिलेगी, लोगों का स्नेह मिलेगा।
5. जीवन की हर एक घटना से किसी-न-किसी रूप से आपको लाभ ही होता है। परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से होने वाले लाभ के बारे में ही सदैव सोचिए।
6. आप अपने जीवन की तुलना अन्य के साथ कर चिन्तित न हों। कर्म करने पर ध्यान दें।
7. आप दुःख पहुँचाने वाले सम्बन्धी, पड़ोसी परिचित को क्षमा कर दें तथा उसे भूल जायें। जितना अधिक आप क्षमा करेंगे उतना अधिक आप तनाव मुक्त रहेंगे।
8. सभी समस्याओं को एक साथ सुलझाने का प्रयत्न करके ऊलझे नहीं। एक समय पर एक ही समस्या का समाधान करें।
9. अकेले मत रहें, अकेला व्यक्ति छोटी-छोटी बातों से जल्दी परेशान हो जाता है। अपनी दुनियाँ में खोये रहने के स्थान पर औरों के लिए कुछ करें। इससे आपका परस्पर आत्म प्रेम बढ़ेगा।
10. जीवन का उद्देश्य तय करें। फिर उसे हिस्सों में समयबद्ध करके प्राप्त करने का पूरा प्रयास करें। हर समय उद्देश्य को प्राप्त करने के बारे में ही सोचें, इससे आपकी शक्ति सही दिशा में कार्य करेगी।
11. अपने कार्य की प्राथमिकता तय करें। पहले महत्वपूर्ण कार्यों को निबटायें, नहीं तो उनकी चिंता तनाव को अनावश्यक रूप से बढ़ायेगी।
12. कमजोर होना, छोटा होना, अभावग्रस्त होना अभिशाप नहीं। जीवन की उपलब्धियों को देखें, कमियों को नहीं। (एक व्यक्ति नंगे पैर जा रहा था। ईश्वर को कोस रहा था, कि उसके पास जूते खरीदने के लिए भी पैसे नहीं हैं। थोड़ी देर चलने के बाद उसने देखा कि आगे एक व्यक्ति जा रहा था, उसके पैर ही नहीं थे। तब उसने परमात्मा को धन्यवाद किया कि यह बहुतों से अच्छा है)
13. उत्साही व्यक्तियों के साथ रहें, आप में भी उत्साह आयेगा। एक घण्टा योग, ध्यान, सैर इत्यादि अवश्य करें, इससे आप पूरा दिन स्फूर्ति एवं प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

14. दूसरों के दुख को बड़ा समझें, अपने दुःख की परवाह मत करें, आपकी चिंताएँ दूर हो जायेंगी।
15. भूतकाल में की हुई गलतियों का पश्चाताप न करें, भविष्य की चिंता ना करें। वर्तमान को सफल बनाने के लिए पूरा ध्यान दीजिये। आज का ही दिन आपके हाथ में है। आज आप रचनात्मक कार्य करेंगे तो कल की गलतियाँ मिट जायेंगी और भविष्य में अवश्य लाभ होगा।
16. आप अपने जीवन की तुलना अन्य के साथ कर चिन्तित न हो। तुलना करने से हीन भावना आती है। अपने में विश्वास रखें कि आप एक अनोखे और विशिष्ट व्यक्ति हैं। इस विश्व में आपके जैसा और कोई नहीं है।
17. जिस परिस्थिति को आप बदल नहीं सकते उसके बारे में सोच कर दुःखी न हों। याद रखिये कि समय एक श्रेष्ठ दवाई है जो सब घावों को भर देता है।
18. ईश्वर से प्रतिदिन प्रार्थना करें, प्रार्थना में शक्ति है। प्रार्थना करने से मन असीम शीतलता का अनुभव करता है। खुशी देने से खुशी बढ़ती है। प्रेम करने से ही प्रेम मिलता है। यदि आप किसी से प्रेम नहीं करेंगे तो इस भूल में मत रहिये कि कोई आपसे प्रेम करेगा।
19. दिन में चार-पाँच बार अपने संकल्पों को साक्षीभाव से देखने का अभ्यास करें, यह चिन्ताओं से मुक्त करने में सहायक होता है। अपने मन में सदैव अच्छे-अच्छे भाव व संकल्प रखें।
20. आप अपनी सभी चिन्ताएँ परमपिता परमात्मा को समर्पण कर दें। वहीं सबसे उत्तम सहारा है, जो इस सत्य को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है।
21. अपने विशेष मित्रजनों तथा संगी-साथियों को कहिए, आप मेरे सच्चे मित्र हैं, "आई लव यू" शायद आपने पहले कभी ऐसा ना कहा हो लेकिन इससे आपके तथा उनके जीवन में बड़ा भारी अन्तर आ जायेगा।
22. प्रणायाम अथवा गहरी और लंबी सांस लेने को अपनी दिनचर्या का अंग बनायें। यदि हम प्राणायाम की सहायता से सांस लेने के प्रति जागरूक रहेंगे तो आत्मविश्वास एवं स्मरण शक्ति बढ़ेगी।
23. गीता में कहा है- "तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाए थे जो खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आये जो लिया यहाँ से लिया जो दिया यहीं पर दिया। खाली हाथ आये. खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है।"

# जिंदगी



सुश्री पूजा

वही दिन है और वही रात है ।  
पर अब पहले जैसी बात नहीं ॥

कुछ लोग बहुत अच्छे हैं , कुछ बहुत बुरे भी हैं ।  
बस अब अपने, अपने पास नहीं ॥

उम्मीदें सबके पास हैं ।  
पर अब कोई किसी के साथ नहीं

मतलब सबके पास है ।  
और बिना मतलब कोई किसी का यार नहीं ॥

कोई बहुत खुश हैं।  
और किसी के पास खुश होने की कोई वजह नहीं ॥

सच तो ये है की जिंदगी का हर लम्हा ।  
यूं ही घटता जा रहा है, शायद यही जिंदगी है ।  
हमको यह समझ रहा ॥

पल दो पल के सब साथी हैं ।  
पर अब रिश्तों में वो बात नहीं ॥

अब इस जिंदगी को कुछ ऐसे जिया जाए कि ।  
जो मिल गया वो अपना, और जो ना मिल वो सपना है ॥

सच और झूठ की इस दुनिया में अब परख करना छोड़ दिया ।

ये जिंदगी है यारों, इसको अब ऐसे ही जीना शुरू किया ॥

जिंदगी में खुशियां कम अरमान बहुत है ।  
यहाँ जिसे भी देखो परेशान बहुत है ।  
पर परेशानी का कोई हल नहीं ॥

इस जिंदगी के गणित को अब समझना छोड़ दिया ।  
क्या घटा और क्या बढ़ा, यह सब उसी पर ही छोड़ दिया ॥

जिंदगी जीने की चाह में, हम क्यों मरे जा रहे हैं ।  
इसी कशमकश में क्यों जिए जा रहे हैं  
इसी कशमकश में क्यों जिए जा रहे हैं ॥



## कार्यालय में कल्याण अनुभाग की गतिविधियां

### (क) आपदा प्रबंधन:

आपदा प्रबंधन के अंतर्गत गठित Quick Response Team ने कार्यालय परिसर में कनिष्ठ अभियंता (विद्युत), केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के सौजन्य से दिनांक 09 सितम्बर 2022 को “आपातकाल के दौरान आग से सुरक्षा” के लिए कार्यालय के कार्मिकों को अग्निशमन यंत्रों के परिचालन का प्रशिक्षण दिया गया।

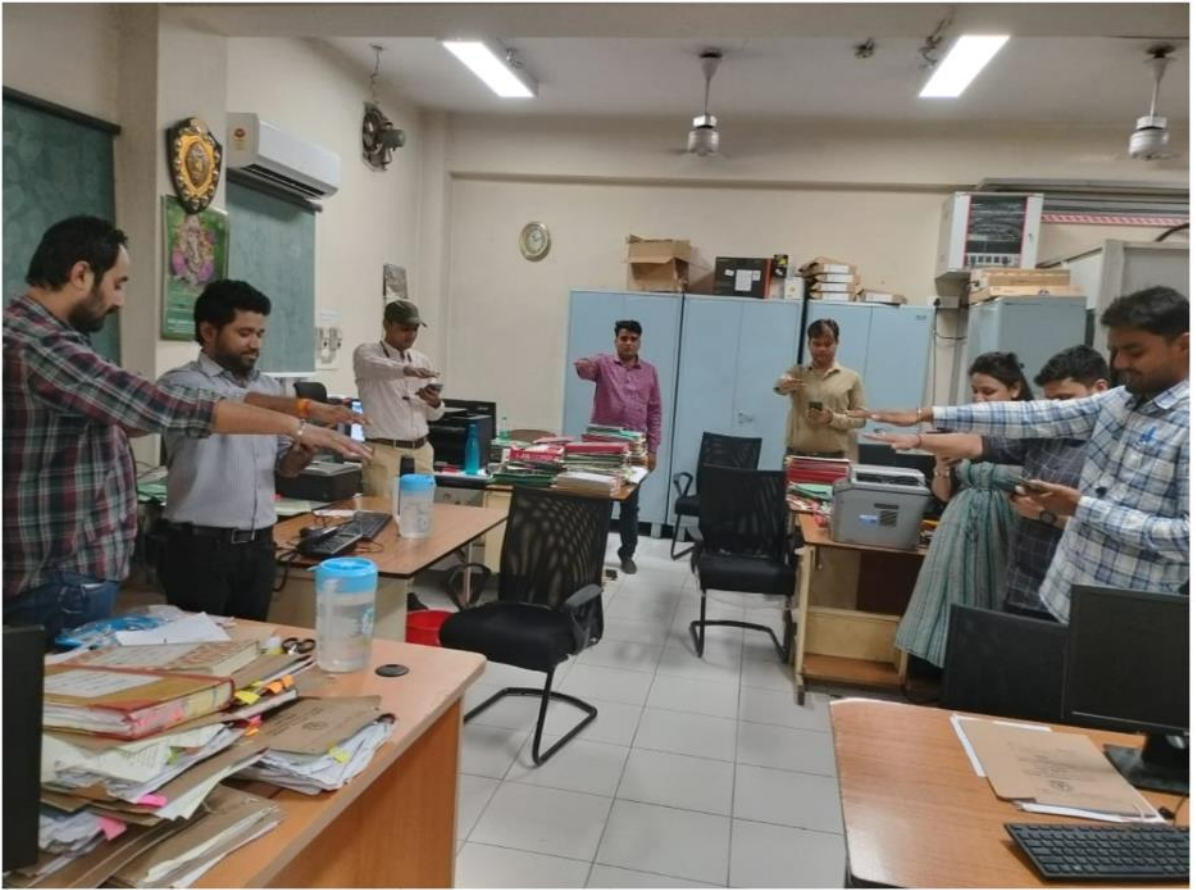


**कार्यालय के कर्मचारियों/अधिकारियों को अग्निशमन यंत्रों के परिचालन का प्रशिक्षण**



## (ख) सतर्कता जागरूकता सप्ताहः

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली, एवं कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), दिल्ली ने संयुक्त रूप से इस वर्ष 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत- विकसित भारत' विषय पर आधारित सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2022, दिनांक 31 अक्टूबर 2022 से 06 नवंबर 2022 तक बहुत उत्साह के साथ मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत दिनांक 31 अक्टूबर 2022 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिज्ञा लेने के साथ हुई। इस दौरान सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्साहवर्धन हेतु वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अलावा उपरोक्त सभी कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भ्रष्टाचार के बारे में जागरूक बनाने एवं इसके निपटान के तरीकों से अवगत कराने हेतु एक व्याख्यान का भी आयोजन किया गया। अंत में दिनांक 07 नवम्बर 2022 को महानिदेशक महोदय/निदेशक (प्रशासन) द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों के उत्साहवर्धन एवं प्रोत्साहन हेतु नगद पुरस्कारों का वितरण किया गया तथा बड़े ही सौहार्दपूर्ण माहौल में कार्यक्रम का समापन हुआ।





## (ग) स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन:

कल्याणकारी गतिविधियों के अंतर्गत सभी स्टाफ के स्वास्थ्य का ध्यान रखने हेतु, "विभिन्न रोगों की जानकारी व कैसे शरीर को स्वस्थ रखा जाए" विषय पर जागरूक करने हेतु एक "निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर" का आयोजन किया गया.

आरोग्य हॉस्पिटल, चित्रा विहार, विकास मार्ग दिल्ली-110092 ने कार्यालय में दिनांक 13 फरवरी 2023 से 15 फरवरी 2023 तक हैल्थ चैक-अप कैंप लगाया, जिसमें लगभग 500 अधिकारियों/कर्मचारियों ने हैल्थ चैक-अप का लाभ उठाया।



लेखक परिचय

क्रम सं.	रचना का शीर्षक	पदनाम / परिचय
1.	कार्यालय में	वेद प्रकाश फोन्दणी, स.लेप.प.अ. (गु.आ.अ.)
2.	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी	श्री सत्यपाल, व.लेप.अ., क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान
3.	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी	श्री बृजेश कुमार, स.लेप.प.अ. (ए.एम.जी-IV)
4.	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनता की भागीदारी	श्री बसंत कुमार चौधरी, लेप. (प्रशासन-1)
5.	सेवा वृत्ति के विभिन्न चरण	सुश्री शोभा रमन, कल्याण अधिकारी
6.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	सुश्री रुचि कुमारी, पत्नी श्री रवि शंकर प्रभाकर, स.लेप.प.अ. (हि.रि.क.)
7.	सकारात्मक सोच	सुश्री किरण मोंगा, व.लेप.अ. (ए.एम.जी-III)
8.	क्यों दरका जोशीमठ ?	सुश्री मीना, पत्नी सुरेंद्र सिंह, व.लेप. (राजभाषा)
9.	आने वाली पीढ़ी की चिंता	सुश्री दीप्ति दीक्षित, क.अनुवादक (हि.रि.क.)
10.	जिंदगी से कुछ बात करते हैं	श्री शेखर कौशिक, स.लेप.प.अ. (प्रशि.एवं परी.)
11.	संभालो जीवन को	सुश्री किरण मोंगा, व.लेप.अ. (ए.एम.जी-III)
12.	ठिकाना श्री गोविंद सिंह मंदिर, राजस्थान	सुश्री रुचि कुमारी, पत्नी श्री रवि शंकर प्रभाकर, स.लेप.प.अ. (हि.रि.क.)
13.	स्वामी विवेकानंद व तत्वज्ञान की उनकी मीमांसा	श्री अमित कुमार हड़ोंदिया, स.लेप.प.अ. (प्रशि.एवं परीक्षा)
14.	समाज सेवा	सुश्री नीलम, डी.ई.ओ. (ए.एम.जी-II)

15.	परम बाँसभक्त कर्मचारी	श्री शेखर कौशिक, स.लेप.प.अ. (प्रशि.एवं परीक्षा)
16.	दिल्ली में प्रदूषण की समस्या: एक अवलोकन एवं समाधान	सुश्री संजना सोनी, लेप. (ए.सी.जी.)
17.	ग्लोबल वार्मिंग	श्री दीपक तोमर, स.लेप.अ. (विशेष कक्ष)
18.	प्रोद्योगिकी क्या है?	श्री राहुल नोगिया, स.लेप.अ. (सूचना प्रणाली स्कंध)
19.	प्रातः सुबह उठ सैर को जाओ	श्री राहुल नोगिया, स.लेप.अ. (सूचना प्रणाली स्कंध)
20.	तनाव मुक्त जीवन के सूत्र	श्री राहुल नोगिया, स.लेप.अ. (सूचना प्रणाली स्कंध)
21.	जिन्दगी	सुश्री पूजा पत्नि श्री संजीव कुमार, व.लेप.अ (जी.डी)
22.	कल्याण अनुभाग की गतिविधियां	श्री अमित कुमार प्रसाद (कल्याण सहायक)



सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2022 के दौरान भ्रष्टाचार मुक्त भारत- विकसित भारत पर व्याख्यान देते हुये व. ले. प. अ.



व्याख्यान का लाभ उठाते कर्मचारी एवं अधिकारीगण



अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम